॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

जैन-तीर्थ भद्रावती

[भद्रावती (भांदक) का विस्तृत इतिहास और परिचय]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक :
चैनकरण गोलेछा
सभापति,
जैन श्वेताम्बर मण्डल
भांदक (चांदा)

प्रथम संस्करण ५०००

मूल्य आठ आना

मुद्रक :
गं. ना. सराफ, प्रबंधक
श्रीकृष्ण प्रि. वर्क्स, वर्धा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक की ओर से

जैन-तीर्थ भद्रावती (भांदक) के इतिहास और परिचय की यह पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमें बहुत हर्ष हो रहा है। वर्षों पहले श्रीमान् हीरालालजी सा० फत्तेपुरिया ने अपने मंत्रित्व-काल में विद्वान यति श्री बालचन्द्राचार्यजी से भान्दक का इतिहास लिखने के लिए अनुरोध किया था और तत्सम्बंधी सामग्री भी उनके पास भेज दी थी। उन्होंने इतिहास लिखना स्वीकार भी कर लिया था, किन्तु उनका स्वर्गवास हो जानेके कारण इतिहास तैयार नहीं हो सका। आदरणीय श्रीमान् हीरालालजी सा० की उत्कट इच्छा भद्रावती का इतिहास प्रकट करने की थी। बाद में उनका भी स्वर्गवास हो गया, लेकिन उनकी अन्तर्भावना और प्रबल प्रेरणा का ही परिणाम है कि आज हम पाठकों के सामने यह पुस्तक रख सके हैं।

श्री० पन्नालालजी फत्तेपुरिया वर्धा, श्री० तिलोकचंदजी कोटारी हिंगणघाट, श्री० रिषभदासजी रांका वर्धा, श्री० खुशालचंदजी खजानची चांदा और श्री० सोभागमलजी लोढ़ा चांदा के हम विशेष कृतज्ञ हैं जिन्होंने सामग्री जुटाकर पुस्तक को सुन्दर और अधिकाधिक ऐतिहासिक विवरण से युक्त बनाने और प्रकाशित करने में सहायता और सहयोग प्रदान किया है।

इसके पूर्व समय-समय पर क्षेत्र की रिपोर्टें भी प्रकाशित होती रही हैं। उनमें क्षेत्र को सहायता और सहयोग देनेवाले सज्जनों का उल्लेख किया गया है। स्थानाभाव के कारण उन सब सज्जनों का उल्लेख इस पुस्तक में नहीं किया जा सका है। हम उन सब के आभारी है। क्षेत्र के वर्तमान मंत्री श्री० सोभागमलजी लोढ़ा खूब लगन, उत्साह और भक्ति से क्षेत्र की उन्नति के लिए प्रयत्न करते रहते हैं।

क्षेत्र की उन्नति और विकास में यह पुस्तक यदि पाठकों की अन्तः प्रेरणा को जगा सकी तो हम अपना श्रम सार्थक समझेंगे।

सावधानी रखने के उपरांत भी यदि कुछ अशुद्धियाँ रह गई हों और कोई बात छूट गई हो तो हम क्षमा-प्रार्थी हैं।

चैनकरण गोलेछा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अनुक्रम

विषय			पृष्ठ
१. भद्रावती (भांदक) परिचय	....	....	१
२. भद्रावती की प्राचीनता पर लेखकों के अभिप्राय		....	९
३. स्वप्न देव [The Dream God]		....	१३
४. प्रतिमाजी का प्रकट होना	....	....	१६
५. तीर्थ का पुनर्निर्माण	....	....	२१
६. व्यवस्थापिका कमेटी और संचालकों का कार्य		....	२३
७. तीर्थ-निर्माण के उद्देश्य	....	....	२७
८. तीर्थ में मंदिर और प्रतिमाएं	....	....	३०
९. तीर्थ की प्रवृत्तियाँ	....	....	३३
१०. क्षेत्र में करने योग्य आवश्यक कार्य		....	४०
११. उत्सव और मेले	...	....	४६
१२. उपसंहार	....	....	४८
१३. कुछ अभिप्राय	....	....	५०
१४. प्रवन्धकारिणी कमेटी	....	....	५२
परिशिष्ट	....	....	५४

चित्र सूची

चित्र नाम	पृष्ठ	चित्र नाम	पृष्ठ
१. भगवान् पार्श्वनाथजी	१	७. पूरा मंदिर : सामने से एक दृश्य	३१
२. श्रीमान् सिद्धकरणजी गोलेछा	२३	८. मूल पार्श्वनाथ मंदिर	३३
३. ,, हीरालालजी फत्तेपुरिया	२५	९. डोलारा तालाब का पुल	३३
४. सिंहद्वार, ५. दादाजीका मंदिर	३४	१०. चंडिका देवी का मंदिर	३४
६. जौहरी माणिकचंदजी का ऋषभदेव मंदिर	३१	११. सिंहद्वार के बाहर नई धर्मशाला	३४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जैन-तीर्थ भद्रावती

मूलनायक भगवान् पार्श्वनाथ की ऐतिहासिक भव्य प्रतिमा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जैन तीर्थ भद्रावती

भद्रावती (भांदक) परिचय

स्थान निर्देश :

यह ग्राम मध्यप्रदेश के चांदा जिले में है। मध्यप्रदेश की राजधानी नागपुर के पास वर्धा जंक्शन से बल्हारशाह और हैदराबाद मद्रास की ओर जानेवाली जी. आय. पी. रेल्वे लाइन पर चांदा के पास भांदक नाम का यह स्टेशन पड़ता है। यह स्थान चांदा से १६ मील और वरोरा से १२ मील, इस तरह चांदा और वरोरा के मध्य में बसा हुआ है। भांदक जाने के लिये वर्धा से सुबह ९।।। बजे और रातको १० बजे दो गाड़ियाँ छूटा करती हैं। करीब तीन घंटे का रास्ता है। हैदराबाद-मद्रास की तरफ के यात्रियों को काजीपेठ, बल्हारशाह या चांदा से वर्धा आनेवाली पैसेंजर पकड़नी चाहिये। ग्रॅण्डट्रंक एक्सप्रेस भांदक नहीं ठहरती।

भद्रावती नामकरण :

अत्यन्त प्राचीन समय में इस ग्राम का नाम भद्रावती ही था, ऐसा ऐतिहासिक प्रमाणों से प्रतीत होता है। महाभारत तथा जैमिनी कथासार में भी धर्मराज के राजसूय यज्ञ के प्रसंग में भद्रावती का उल्लेख आता है। इस राजसूय यज्ञ के लिये लगनेवाला शामकर्ण अश्व जो भद्रावती के राजा युवनाश्व के पास था उसे प्राप्त करने महा-पराक्रमी भीम को, अपने साथी मेघवर्ण और कृष्णकेतु के साथ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भद्रावती में आकर युद्ध करना पड़ा था। कलिंग देश के जैन सम्राट खारवेल को, भद्रावती की राजकन्या ब्याही गई थी। इन सब घटनाओं का इसी भद्रावती से सम्बन्ध रहा था, ऐसा प्रतीत होता है।

इन पौराणिक और ऐतिहासिक प्रमाणों से इस ग्राम का नाम भद्रावती ही रहना आवश्यक था। इसके लिये श्री जैन श्वेतांबर मण्डल की ओर से किये गये प्रयत्नों के फल स्वरूप इस गाँव का नाम सन् १९४० में भांदक से भद्रावती किया गया। समस्त सरकारी दफ्तरों और डाकघर आदि में भद्रावती नाम ही प्रचलित हो गया है। किन्तु रेल्वे स्टेशन का नाम अबतक भी भांदक ही चला आ रहा है। इस भांदक नाम के रेल्वे बोर्ड पर यात्रियों के जानने के लिये 'भद्रावती पार्श्वनाथ जाने के लिये' पंक्ति जोड़ दी गई है।

स्टेशन से तीर्थक्षेत्र तक की व्यवस्था :

स्टेशन से मंदिरजी तक पक्की सड़क है। मंदिरजी की तरफ से प्रत्येक ट्रेन के समय पर सवारी गाड़ी उपस्थित रहती है। अधिक गाड़ियों की आवश्यकता होने पर स्टेशन पर किराये की गाड़ियाँ भी मिल सकती हैं।

स्टेशन के निकट मंदिरजी की धर्मशाला :

स्टेशन के अहाते से लगाकर ही, रोड़ पर यह धर्मशाला है। आवश्यकता होने पर यात्रीगण इसका उपयोग कर सकते हैं। यह धर्मशाला हिंगणघाट निवासी श्रीमान सेठ पुखराजजी कोचर और

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीमान सेठ बन्सीलालजी कोचर के पूर्वजों की पेढी, श्रीमान रायमलजी मगनमलजी फर्म के मालिक श्रीमान चंदनमलजी धनराजजी की तरफ से भेंट की हुई है।

गाँव की स्थिति :

इस गाँव की जन-संख्या करीब पाँच हजार है और गृह-संख्या लगभग एक हजार है। गाँव की स्थिति के अनुसार कपड़े, किराने आदि का साधारण व्यापार होता है। हर बुधवार को साप्ताहिक बाजार लगता है। लेकिन ग्राम भर में और ग्राम के बाहर भी इत्र-तत्र बिखरे हुए पुरातन अवशेषों और ऐतिहासिक चिन्हों से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में यह एक भव्य नगरी थी। अगर समस्त पुरातन अवशेषों और महत्त्वपूर्ण स्थानों का पूरा वर्णन किया जाय तो एक ग्रंथ ही तैयार हो सकता है। यहाँपर प्रसंगवश कुछ स्थानों का परिचय दिया जा रहा है।

भद्रनाग मंदिर :

गाँव में प्रवेश करते ही सड़क के किनारे पर यह मंदिर लगता है। कहा जाता है कि यह मंदिर हजारों वर्ष पुराना है। इस मंदिर की मूर्ति को कई मणिभद्र देव की और कई बुद्ध देव की बताते रहे हैं। इस मंदिर में प्रतिवर्ष मेला लगता है। कहते हैं मेले के समय एक बड़े भारी नागदेवता के दर्शन होते हैं। इस परसे कुछ लोगों का अनुमान है कि यह धरणेन्द्र देव का मन्दिर होना चाहिये। सन् १२८६ में इस मंदिर का जीर्णोद्धार ग्रामवासियों की ओरसे किया गया और भद्रनाग मंदिर के नाम से इस मंदिर की घोषणा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर दी गई। इसके अहाते में एक ही पत्थर में उत्कीर्ण की हुई एक पुरातन बावड़ी भी है।

प्राचीन किला :

यहाँ पर एक पत्थरों से बंधा हुआ अच्छा प्राचीन किला भी है जो अब खण्डहर हो गया है। किले की ऊँची जमीन के भाग को देखने से ज्ञात होता है कि यहाँ राजा का दरबार लगा करता था। किले के अन्दर एक बड़ी-सी चौमुखी बावडी भी है।

विंझासन की गुफा :

गाँव से थोड़ी ही दूर पर एक पहाड़ी है। उस में एक दूसरी से मिली हुई तीन तरफ तीन गुफाएँ हैं। गुफाओं की पाषाणों-दीवालों में तीनों तरफ तीन पद्मासनस्थ सात फुट की ऊंचाई में बड़ी बड़ी मूर्तियाँ उत्कीर्ण की हुई हैं। खण्डित दशा में होने के कारण यह मूर्तियाँ जैनों की हैं या बौद्धों की इसका अनुमान लगाना अशक्य हैं। यह एक प्राचीन गुफा है। इसे विंझासन की पहाडी गुफा कहते हैं।

कई बार इस गुफा में जैनों के महान तपस्वी श्री मोतीलालजी (मोतीमुनि) महाराज ने कठिन तपस्यायें की हैं। इनका स्वर्गवास विक्रम संवत् २००० कार्तिक बदी १२ को भोपाल में हो गया है। इनके पादुका की प्रतिष्ठा मिती माघ सुदी १ संवत् २००६ में भोपाल के श्रीसंघ द्वारा भोपाल में की गई है।

श्री चंडिकादेवी का पुरातन मंदिर :

श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर के पीछे समीप ही में श्री चण्डिका यह पुरातन मंदिर भग्नावस्था में आज भी खड़ा है। देवी की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रतिमा के साथ साथ अनेक प्राचीन मूर्तियाँ पद्मासन अवस्था में रखी हुई हैं जो खण्डित हैं। ये मूर्तियाँ जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों ही धर्मों की हैं। पुरातत्त्व की सामग्री होनेसे सब मूर्तियाँ सरकार की देखरेख में रखी हुई हैं। दीवाल पर शिलालेख भी खुदा हुआ है, पर घिस जाने के कारण पढ़ा नहीं जा सकता।

एक छोटीसी टेकडी :

उक्त मंदिर के थोड़े ही फासले पर यह टेकड़ी है। प्रतिवर्ष पौष कृष्ण १० को श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के दिन, जब कि वार्षिक मेला भरता है, बड़ी धूम धाम से श्री संघ का जुलूस इस टेकडी पर पहुँचता है और वहाँपर भगवान का अभिषेक, पूजा, आराधना आदि की जाती है।

डोलारा तालाब :

इस टेकडी से लगकर ही १७ एकड़ का यह एक बड़ा भारी तालाब है। इसके मध्यभाग में एक टेकड़ी है। इस पर जानेके लिये तालाब में से ही बड़े बड़े पत्थरों का बंधा हुआ एक पुल है, जिसकी चौड़ाई ७ फुट है। कहते हैं इस तालाब में से सैकड़ों मूर्तियाँ निकली थीं जिनमें अनेक जैन मूर्तियाँ भी थीं। लेकिन वह सब खण्डित थीं। सरकारने यह सब मूर्तियाँ पुरातन स्मृति चिन्ह होने के कारण दूसरे महत्त्वपूर्ण स्थानों पर भिजवा दी। चित्र में यह पुल दिखाया गया है।

इस टेकड़ी पर रहे हुए भग्नावशेषों से यह मालूम होता है कि यहाँ पर कोई भी क्यों न हो, एक भव्य और सुन्दर मंदिर जरूर था। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुहावना लगता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जलमंदिर की योजना :

दूर दूर से आनेवाले यात्रीगण जब एकान्त स्थल में इस तालाब के, मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्यपूर्ण दृश्य को देखते हैं तब बड़े ही श्रद्धा और भक्ति के साथ वे अपनी अभिलाषा प्रकट करते हैं कि श्री पावापुरी-से दृश्यों से पूर्ण इस टेकड़ी पर एक सुन्दर मंदिर का निर्माण कर उसमें श्री पार्श्वनाथ प्रभु की काऊसग्ग ध्यानमुद्रा की खडी मूर्ति विराजमान की जाय जिससे जैन अजैन सभी मानव समाज को आध्यात्मिक दृष्टिसे बहुत ही लाभ पहुँच सकेगा। और साथ ही इस तीर्थ का अधिकाधिक महत्त्व बढ़कर इस तलाव की छोटी-बड़ी मछलियों और जलजंतुओं का भी अधिकता से संरक्षण होगा, जिससे जीव दया का भी आवश्यक और अधिक पुण्य उपार्जन का भारी लाभ श्रीसंघ को मिलेगा। इस तरह करने से जीव दया के साथ ही साथ इस एकान्त स्थान में आज की इस प्राकृतिक सुन्दरता और रम्यता में अधिक वृद्धि होकर प्रभु के काऊसग्ग ध्यान की वह मनोहर मूर्ति, त्याग के रहस्य को संकेत द्वारा दर्शाते हुए, आनेवाले मानव मात्र के हृदय में भक्ति रस पैदा कर, संसार की असारता की ओर ध्यान खींचते हुए, संभव है महात्माओं का निवास स्थान ही इस ओर बना दे, जिससे पुरातन संस्कृति का दृश्य फिरसे नजरों के सामने खड़ा हो जाय।

इस पवित्र भारत भूमि में महान संस्कृति के पुरातन स्मृति चिन्ह, कहींपर भी क्यों न हो, नजरके सामने आनेपर, मानव समाजपर पवित्र प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। इसीलिये तो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ऐसे कार्यों में हमारे पूर्वजोंने लाखों करोड़ों रुपये लगाकर पुण्य ऊपार्जन करते हुए महान् आत्माओं का आदर्श हमारे सामने रखा है। जैसे बड़े बड़े तीर्थों के रूप में श्री शत्रुंजयजी, श्री गिरनारजी वगैरह अनादिकालीन पुरातन स्मृति चिन्ह हैं।

प्रभु के मुख्य मंदिर से लगाकर इस तालाब तक की सारी जमीन मंदिरजी की है। उपर्युक्त जलमंदिर की योजना अगर कार्यान्वित हो जाय तो इस बीचकी जमीन में आगे चलकर आनेवाले दाताओं के दिलों में न मालुम कैसे कैसे भाव पैदा होकर, न मालूम कैसे कैसी योजनायें यहांपर बनजावे, जिससे यह एक आदर्श और महान् स्थान के रूप में एक छोटीसी जैन नगरी ही बन सकती है। भावी के गर्भ में क्या छिपा है, यह तो कोई जान नहीं सकता। किन्तु आप लोगों की इस तरह खिंची हुई रूप रेखा का कोई न कोई दिन अपूर्व लाभ मिले बिना नहीं रहेगा। जैसा कि सिर्फ पार्श्वनाथ प्रभु की इस प्राचीन प्रतिमाजी को ही लेने के बाद, हमारे पूर्वजों की इस स्थान में खिंची हुई रूप रेखा के कारण आज आपकी आँखों के सामने जंगल में मंगल कैसा सुहावना, सुन्दरता और रमणीयता का भव्य तीर्थस्थान, भक्ति और श्रद्धा से आप लोगों के दिलों को मोहित कर रहा है। अगर शासन प्रेमी श्रीसंघों और उदार श्रीमानों ने ध्यान दिया तो इस योजना को हाथ में लिया जा सकता है।

उपर्युक्त तालाब के दृश्य का चित्र में निरीक्षण करने से आप के ध्यान में सारी बातें आ जावेगी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहस्रों निशा की कालिमा से ढंके हुए सम्राट अशोक कालीन यह पुरातन स्मृति चिन्ह और यहाँ के सैकड़ों ही तलाव और उन तालाबों के संबोधित किये जानेवाले पुरातन नाम जैसे चिंतामन तालाब, सूर्य कुण्ड तालाब वगैरह, सैकड़ों ही कुएँ, बावडी, जगह-जगह रहे हुए मंदिरों के भग्नावशेष और मंदिर, बड़ी बड़ी खण्डित मूर्तियाँ जो सरकारी संरक्षण में पुरातन स्मृति चिन्ह होने कारण आर्कि-यालाजीकल डिपार्टमेंट के अधीन अभी भी इसी भद्रावती में मौजूद हैं। इस तरह ऊपर बताये मुताबिक हरएक पुरातन स्मृति चिन्हों पर विचार कर कल्पना करने से आपको इस भद्रावती की महानता का और प्राचीनता का सुन्दर आभास जरूर हो सकेगा।

संक्षेप में भद्रावती का यह परिचय है। इसकी पूरी कल्पना तो यहाँपर आकर दर्शन और निरीक्षण करनेवाले ही कर सकेंगे। श्री पार्श्व प्रभु के चरणों में जो शान्ति मिलती है, प्राकृतिक सौंदर्य से जो आनंद आता है, ऐतिहासिक सामग्री से नगर की जो भव्यता हृदय में स्थान करती है, उसका वर्णन हम इस तुच्छ लेखनी से करने में असमर्थ हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: २ :

भद्रावती की प्राचीनता पर लेखकों के अभिप्राय

चीनी प्रवासी हुयेनत्सांग :

सन् ६२९ से ६३९ तक मध्यप्रदेश के स्थानों का निरीक्षण करते हुए इस विद्वान प्रवासी ने लिखा बताते हैं कि भद्रावती का राजा क्षत्रिय था। वह अत्यंत विद्याप्रेमी, कलाप्रेमी और परम धार्मिक था। यहाँ पर सैकड़ों बड़े बड़े मठ थे। एक एक मठ में हजारों ऋषि मुनि रहते थे। बड़े बड़े मंदिर और विद्यालय थे।

प्राचीन भग्नावशेषों और खेतों में से निकलनेवाली सामग्री से मालूम होता है कि आज का यह छोटा-सा ग्राम एक समय में बड़ा भारी नगर था जिसके पुरातन स्मृति चिन्ह संस्कृति की आज भी याद दिलवाते हैं। यहाँ पर मौर्य, गुप्त, आन्ध्र, राष्ट्रकूट, चालुक्य, वाकाटक, आदि के पश्चात् गोंड राजाओं ने भी राज्य किया था और अन्त में भोंसलों का राज्य हुआ था। बाद में २१ मई सन् १८१८ में अंग्रेजों ने युद्ध कर अपना राज्य स्थापित किया।

कलिंग देश के राजा जैन सम्राट महामेघवाहन खारवेल के, इस नगर की राजकन्या के साथ हुए विवाह का उल्लेख पहले किया गया है। इसी तरह महाभारत और जैमिनी कथासार का उल्लेख

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भी ऊपर भद्रावती के परिचय में किया गया है। इस से मालूम होता है कि जैन, बौद्ध और वैदिक मत के अनुयायियों से बसी हुई यह नगरी तीनों मतों के संमिश्रण का एक बड़ा भारी केन्द्रस्थान बनी हुई थी।

श्री. सी. मिडलन स्टुअर्ट :

यह सज्जन चांदा जिले के पोलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट (डी. एस. पी.) थे। इन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया के ता. ६ जुलाई सन् १९२४ के अंक में इस भद्रावती के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। इस लेख का कुछ मुख्य अंश हम आगे दे रहे हैं। इस से मालूम होगा कि भद्रावती की प्राचीनता के सम्बन्ध में अंग्रेज लेखकों के मन में भी जिज्ञासा और दिलचस्पी थी और वे इसकी प्राचीनता पर विश्वास करते थे। यह पूरा लेख मंदिरजी की पेढी की दीवाल पर फ्रेम में जडा हुआ है। इसी लेख में श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा को उक्त लेखक ने स्वप्नदेव के नाम से संबोधित किया है।

मुनि श्री कर्पूरविजयजी महाराज :

आप मुनि श्री हंसविजयजी महाराज के शिष्य थे। प्रभु की भव्य प्रतिमाजी के इस भद्रावती में प्रकट होने के बाद दूर दूर से स्पेशल ट्रेनों द्वारा और पैदल भी, हमारे कई जैन भाइयों ने संघ निकाल, इस तीर्थ की यात्रा की है। जिस में संवत् १९७१ में अमरावती निवासी श्रीमान सेठ फत्तेचंदजी फलोधिया भी संघ के साथ यात्रा करने भद्रावती पधारे थे तब इस संघ के साथ मुनि श्री कर्पूरविजयजी भी पधारे थे। आपने उस समय प्रभु के सामने स्तवन द्वारा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जो प्रार्थना की थी उस में भद्रावती की प्राचीनता का भी वर्णन किया था, जो नीचे दिया जाता है :

स्तवन

प्रभु पारसनामी अंतरजामी ॥ सुणलो नी मेरी पुकार ॥
केसरिया स्वामी करुणा स्वामी ॥ करुणा करीने ऊगार ॥ १ ॥प्रभु०॥
भद्रावती नगरी अति प्राचीन ॥ श्री भद्रसेन जिहां राय ॥
जैन धर्म पालक बसावे ॥ लेख ऊपर थी जणायरे ॥ २ ॥प्रभु०॥
अडतीस कोस लांबी नगरी ॥ हति अति मनोहर ॥
बार कोस ऊपर किल्लानो ॥ हजु देखाव तयारेर ॥ ३ ॥प्रभु०॥
बावन जिनालयनुं मंदिर ॥ खंडेर रुपे त्यांय ॥
अनेक पाषाणनी मूर्तियो ॥ निकले छे जूवो ज्यांयरे ॥ ४ ॥प्रभु०॥
सातसो मंदिर सातसो कुआ ॥ सातसो हति जिहां वाव ॥
पत्थरोमां कोतरेला लेखो ॥ देखाडे छे एहवा बनावरे ॥ ५ ॥प्रभु०॥
कालक्रमे भद्रावती नगरी ॥ भांदक थी ओलखाय ॥
पण महिमां महीतलमां ॥ मूर्ति मंदिर नो ओलखायरे ॥ ६ ॥प्रभु०॥
वांछित-पूरण संकट-चूरण ॥ तेविसमां जिनराय ॥
केसरिया पारसनाथ स्वामी ॥ देखता मन हरखायरे ॥ ७ ॥प्रभु०॥
सप्त फणां सिरपर अति सुन्दर ॥ अष्टमी शसी सम भाल ॥
मोक्षनगर ना सार्थवाह तमें ॥ टालो दुख जंजालरे ॥ ८ ॥प्रभु०॥
आतम लक्ष्मी संपदा आपो ॥ अखूट दौलत दातार ॥
हंसविजय कवीरायनो कर्पूर ॥ नमन करे वारंवार रे ॥ ९ ॥प्रभु०॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यहाँ पर निकले हुए अनेक स्मृति चिन्ह और लेख आदि—महत्वपूर्ण स्थानों में रखने के लिये सरकार लेगई। तबभी पूज्य मुनि महाराज ने निरीक्षण कर जिन सामग्रियों का स्तवन में वर्णन किया है उससे भी इस भद्रावती की प्राचीनता का और उस समय के जैनत्व की महानताका भास हुए बिना नहीं रहता।

इतिहास वेत्ताओं का कथन है कि मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त जैन धर्मानुयायी था और मौर्य साम्राज्य में जैनधर्म को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। अशोक भी मौर्यवंश का ही एक प्रतापी सम्राट था। वह यद्यपि बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गया था तथापि उसका अन्तकरण सब धर्मों के प्रति समभाव पूर्ण था। सम्प्रति जो कि अशोक का पोता था, जैन धर्म का पक्का भक्त था और उसने देश में लाखों मूर्तियाँ बनवाकर फैला दी थी। उस काल में धार्मिक द्वेष नहीं बढ़ा था इसीलिये अनुमान होता है कि भद्रावती में जो सब धर्मों की मूर्तियाँ पाई जाती हैं वह मौर्यकालीन ही है।

भद्रावती में सैकडों कुएँ और बावडियाँ हैं और वे विशेष प्रकार के सीढ़ियों के चौकोन तथा गहरे मानो तलघर के समान बने हुए हैं। इस से भी भद्रावती की प्राचीनता मौर्य काल तक पहुँच जाती है।

श्री भद्रबाहु स्वामी, मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के साथ जब दक्षिण भारत में पधारे तब भद्रावती नगरी के पास ही, प्राकृतिक सौन्दर्य से विभूषित वन-उपवन के गुफाओं में सम्भवतः आत्मसाधना और तपस्या की थी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ३ :

स्वप्न देव

THE DREAM GOD

BY

C. MIDDLETON — STEUWART

In this article the story is told of the rise of a Jain Temple of which promised to be one of the most remarkable Buildings of its kind in India. It is being erected round the site of a Statue of Parasnath discovered a dozen years ago—a spot which traddition carries back to the creation. And some day it may be the principal pilgrimage centre in India as well as in the Central Provinces.

Found by a Bishop of the church, and traced through a drawn by the brother of a Marwari Cotton Broker, Parasnath once again gazes inscrutably before him, whilst around him, and on the site of his ancient shrine, is arising a temple, towards the magnificence and adornment of which the wealth of the Jain Community of India is being poured out with lavish hand.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

For centuries he slept amidst the dust and ruins of forgotton fanes in ancient Bhadravati bowing before the edicts of Ashok, he surrendered to the call of the Gautama, and mother earth, who first bared her bosom for the old beliefs, mercifully took into her shrounded embrace the neglected image.

The God which thousands of years before had seen that fierce conflict of the Mahabaric heroes for the possession of the Shyam Karna steed, to its doctrine of meekness, prepared for slumber, lulled by the distant chanting of monks in their rock hewn cells.

And Parasnath biding his time, slept.

Today, if those pious monks of Asoka's time, could revisit the scene, they would find the silence of desolation and the jungle where once their monasteries stood. They would find the blackness of a thousand nights concealing the seated Budha in the caves of Wijasan—his only attendants the bat.

Gone the great city of their day; gone the Sangharams and colleges of their learning. But the temple of Parasnath, ruined though it be, still stands. Parasnath despised, neglected and forgotton then, stirs in his sleep now, and from the hushed gloom of his ruined abode comes the clang of bell and the mystic murmer of the Sanskrit Mantras.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

To this day, the jungle and open spaces under cultivation yields to the plough, interesting relics of a bygone civilization. It was in some such fortuitions way that the head of the scottish Mission in Chanda discovered the statue of Parasnath. It lay in a tangle of weeds half buried in the earth, but partially protected by the trampled down remains of an old temple. It was removed and placed in a shed and declared a protected Manument by Government.

The Times of India Illustrated Weekly,
July 6th, 1924.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ४ :

प्रतिमाजी का प्रकट होना

भद्रावती गाँव के किनारे पर ही जंगल की एक घनी झाड़ी में घिरे हुए श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमाजी के दर्शन, चाँदा की चर्च के एक पादरी को इस झाडी में घूमते समय अचानक हुए थे। उस वक्त यह प्रतिमाजी आधी जमीन में और आधी जमीन के ऊपर प्राचीन मंदिर के भग्नावशेषों से रक्षित विराजमान थी। इसकी सूचना मिलते ही सरकार ने इस प्रतिमाजी को अपने कब्जे में लेकर आर्किलाजिकल डिपार्टमेंट के अण्डर में व्यवस्थित रखकर इसे पुरातन स्मृति चिन्ह घोषित किया। इसी अहाते में श्री चतुरभुज-भाई पुंजाभाई, जो आकोला के निकटवर्ती तीर्थक्षेत्र श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ सिरपुर पेढी के मैनेजर थे, इन्हें संवत १९६६ माघ सुदी ५ को सोमवार की रात को एक स्वप्न दिखाई दिया। इस स्वप्न का पूरा वर्णन, श्री मोहनलालभाई जवेरी अमदाबाद निवासी ने लिखी पुस्तक "प्रकट प्रभावी पार्श्वनाथ" में किया है, इस पुस्तक में उन सब स्थानों के श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमाओं का वर्णन है जो चमत्कारपूर्ण तथा अतिशय संपन्न हैं। इस पुस्तक में इस भद्रावती के श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के प्रकट होने का वर्णन भी स्वप्न की हकीकत के साथ दिया गया है। यह पुस्तक संवत १९७९ में गुजराती भाषा में प्रकट हुई है। पाठकों की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जानकारी के लिये उक्त लेखक का लिखा हुआ लेख, लेखक की भाषा में ही नीचे दिया जाता है :

स्वप्न का वर्णनः

ચતુરભુજ ભાઈ સ્વપ્ન માં દેખતે હૈં કિ—પોતે ભાંદકની આસપાસ જંગલમાં રખડે છે. તેવામાં એક દસ હાત લાંબો કાલો નાગ તેની પાછલ પડયો. ચતુરભુજ જ્યાં જ્યાં જાય ત્યાં ત્યાં નાગ પણ તેની પાછલ પાછલ જાતો. આખરે તે ફરી ફરી ને થાકયો પણ નાગરાજે તેનો કેડો છોડો નથી। છેવટે નાગને તેણે વિનંતી કરીકે 'હે નાગરાજ મેં તમારો કાંઈ અપરાધ કર્યો નથી, છતાં તમે શા માટે મારી પાછલ પડયા છો?'

"मैं तुझे कुछ चमत्कार बताऊँ, तू पाँच सौ रुपयों का खर्च कर।" નાગે મનુષ્ય ભાષામાં જણાવ્યુ.

"आप कहते हो वह ठीक है, लेकिन मैं तो कंगाल हालत में हूँ। चाकरी करके उदर-पोषण करता हूं। पाँच सौ रुपये कहाँसे लाऊं।" તેણે જવાબ આપ્યો.

"क्या तू इतने रुपये खर्च नहीं कर सकता?" નાગે કહ્યું.

"मैं सच कहता हूँ अभी मेरे पास कुछ नहीं है।" તેણે કહ્યું.

"अच्छा, तू तेरे पीछे देख।" નાગરાજે જણાવ્યું.

તે માણસ નાગના આવા વચન સાંભલીને મનમાં ઘણો મુંઝાયો કે જરૂર હું પાછલ જોઇશ એટલે નાગ મને કરડી ખાશે, છતાં પણ આખરે જ્યારે તેણે બિતાં બિતાં પાછલ જોયું તો, આશ્ચર્ય! તે ઊભો હતો ત્યાં જંગલ ન હોતું પરન્તુ એક મોટું નગર હતું. તેમજ તેની સાંમે પશ્ચિમ મુખી દેરાસરમાં શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પીલા રંગની પ્રતિમા જોવામાં આવી. તરતજ તે તો ત્યાં ભગવંતની સ્તુતિ કરવા લાગ્યો."

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

નાગરાજ એ અરસાંમાં બોલ્યા "देख यह भद्रावती नगरी और केसरिया पार्श्वनाथजी का बड़ा तीर्थ है सो अभी विच्छेद हुआ है। इस तीर्थ का उद्धार करने का तू प्रयत्न कर।" અને નાગરાજ અદૃશ્ય થતાંજ તરતજ તેની આંખ ઊઘડી ગઈ.

ભગવાનની પ્રતિમાં સાડા છે ફુટ લગભગ ફણા સહીત ઉંચી છે. ભદ્રાવતી નગરીમાં આ પ્રતિમાં ૨૩૦૦ તેવી સો વર્ષ પહેલાની છે. આ જગ્યાયે ખોદ કામ કરતાં અનેક પ્રતિમાંઓ પણ નિકલે તેમ છે.

यह सब संवाद और वर्णन जैसा उपर्युक्त पुस्तक में श्री मोहनलाल भाई जवेरीने लिखा है, वैसा ही यहाँ उध्दृत किया है।

प्रतिमाजी के शोध में चतुरभुज भाई का प्रस्थान :

उपर्युक्त स्वप्न देखने के चार दिन पश्चात् चतुरभुजभाई माघ सुदी ९ को प्रतिमाजी की शोध के लिये अकोला से रवाना हुए। भांदक आने पर एक ब्राम्हण से उन्हें ज्ञात हुआ कि प्राचीन काल की भद्रावती यही भांदक है। तब यहां उन्होंने अपनी शोध शुरू की और झाडी में घूमते घूमते इन्हें इस प्रतिमाजी के दर्शन हुए। स्वप्न में देखी हुई ही इस प्रतिमाजी को देखकर उनके हर्ष का पारावार नहीं रहा। वहाँ से वह चांदा गये। अपने स्वप्न का और प्रतिमाजी के दर्शन का सब वृत्तांत चांदा के श्रीसंघ को सुनाया। उस समय वहां पर पूज्य मुनि श्री सुमतिसागरजी विराजित थे।

सारा वृत्तांत सुनकर चांदा का श्रीसंघ और श्री मुनिमहाराज भांदक पधारे, मुनि महाराज ने प्रतिमाजी का दर्शन और निरीक्षण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर नागदेव के दिये गये आदेश की पुष्टि करते हुए ही आदेश किया कि तेवीसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वप्रभु की यह प्रभावपूर्ण प्राचीन प्रतिमा है और यह क्षेत्र बहुत ही प्राचीन है, इसलिये यहाँ शीघ्र ही जीर्णोद्धार करवा तीर्थ की स्थापना करानी चाहिये। इस तरह नागदेव के रूप में अधिष्ठायक देव ने श्री चतुरभुजभाई को जो आदेश किया था वही आदेश उक्त मुनिमहाराज ने भी किया।

प्रतिमाजी की प्राप्ति :

उपर्युक्त दैवी आदेश और स्वप्न तथा स्थान के महत्व को समझकर इस प्रतिमाजी को प्राप्त करने अर्जियों द्वारा चांदा श्रीसंघ ने सरकार से मांग की। प्रतिमाजी की सुरक्षा में सरकार ने लगा खर्च ८०० आठसौ रुपया लेकर चांदा के संघाध्यक्ष श्रीमान सेठ सिद्धकरणजी गोलेछा के नाम कुछ करारों के साथ लिखा-पढी कर इस प्रतिमाजी का सारा प्रबन्ध चांदा श्री संघ के स्वाधीन कर दिया। और साथ ही १०॥ रुपया सालाना टेक्स मुकरर कर के २१ एकर जमीन भी सरकार ने दी, इस जमीन के अलावा और भी कुछ जमीन यहाँ के मालगूजार साहबों से वंशपरंपरा के लिये बक्षिस करवाई गई जिसकी योग्य लिखा-पढ़ी करा ली गई।

श्री पार्श्व प्रभु का प्रभाव :

प्राचीन काल से ही हरवक्त प्रभु की प्रतिमाजी का प्रभावशाली चमत्कारिक परिचय तत्काल मिलता रहा है। जिसके दर्शन, पूजन और स्मरण से भक्तों के विकट से विकट संकट भी दूर हुए हैं,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिसके सैकड़ों दाखले आपको ग्रंथों में मिलेंगे। इसी कारण पुरातन काल से ही तेवीसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ प्रभु की बहुत ही अधिक ख्याति और प्रसिद्धि है, और भावी तीर्थंकर के रूप में हजारों और लाखों वर्ष पहिले से ही अनेक जगह अनेक नामों से प्रभु की प्रतिमाजी देवी देवता वासुदेवों और नर-नारियों द्वारा पूजी गई है। और बड़े ही चमत्कारों के साथ प्रकट भी हुई है। इसका हर जगह का इतिहास मालूम कर लेने पर हृदय में बड़ा ही आनंद और भक्तिरस पैदा होता है।

इस कलियुग में आज भी तो यह ताजा उदाहरण हमारे सामने इस भद्रावती में मौजूद है, जो उपर्युक्त स्वप्न द्वारा संकेत कर प्रभु के अधिष्ठायक देवों ने यहाँ तीर्थ रचना का आदेश किया था।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीमान् सिद्धकरणजी गोलेछा, चांदा जैनतीर्थ भद्रावती के सर्व प्रथम सभापति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ५ :

तीर्थ का पुनर्निर्माण

श्री पार्श्वप्रभु की भव्य प्रतिमा तथा उनके चमत्कारपूर्ण प्रभाव और सुन्दर जल-वायु वाले इस स्थान पर इस सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तीर्थ का पुनर्निर्माण होना अत्यन्त आवश्यक समझकर ही चांदा के श्री संघ ने इस तीर्थ की रचना का कार्य शुरू किया जिसमें आसपास के चांदा, बरोरा, हिंगनघाट, वर्धा, नागपुर, वगैरह सभी गांवों के श्री संघों का इस कार्य में पूर्ण सहयोग द्वारा चांदा निवासी श्रीमान लखमीचंदजी पुंगलिया के अस्थायी मंत्रीपद में यहाँ का कार्य शुरू किया गया। इस तरह कार्य करने में, हरएक कामों में वर्धा निवासी श्रीमान हीरालालजीफत्तेपुरिया का खास कर सक्रिय रूप से शुरू से ही सहयोग रहा है।

इस तरह तीर्थ के पुनर्निर्माण के कार्य में कार्यकर्त्ताओं की खास जरूरत थी। नीचे लिखे हुए श्रीमान सज्जनों ने दिलचस्पी के साथ प्रारम्भ में कार्य शुरू किया।

श्रीमान	सेठ सिद्धकरणजी गोलेछा	मु० चांदा
,,	लखमीचंदजी पुंगलिया	,, चांदा
,,	हीरालालजी फत्तेपुरिया	,, वर्धा
,,	लूनकरणजी लोढा	,, चांदा
,,	उदेकरणजी बांठिया	,, चांदा
,,	किसनचंदजी कोठारी	,, चांदा
,,	सुगनचंदजी बेद	,, बरोरा
,,	पोकरचंदजी सिपानी	,, बरोरा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उपर्युक्त सभी सज्जनों ने शुरू से अन्त तक इस तीर्थ की बड़े ही उत्साह और भक्ति से सेवा करते करते ही अपनी अपनी जीवन यात्रा पूरी की है।

इस तरह इस तीर्थ के पुनर्निर्माण का कार्य शुरू कर कुछ समय तक कार्य चलाने के बाद इसकी सारी योजनाओं पर विचार करने संवत १९६९ प्रथम आसाढ़ बदी १० को भद्रावती में उपस्थित होने के लिये, देश के जैन श्वेतांबर श्री संघों को निमंत्रण भेजे गये, और साथ ही इस सभा का अध्यक्ष स्थान सुशोभित करने के लिए कलकत्ते के जौहरी श्रीमान सेठ बद्रीदासजी बहादुर को निमंत्रण दिया गया। किन्तु कार्यवश सभा में वे उपस्थित नहीं हो सके। इसलिये सभा की सारी कार्रवाही नागपुर निवासी श्रीमान सेठ पूनमचंदजी सेठिया की अध्यक्षता में शुरू हुई। सभी जगह से उपस्थित हुये ५०० से ऊपर संख्या में जैन श्वेताम्बर श्री संघ के सामने इस प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण वृत्तांत रखा गया और आगे की सारी रूपरेखा समझाकर कार्यपूर्ति के लिये निधि की अपील की गई।

उपस्थित श्रीसंघ की सभा ने इस तरह सारा वृत्तान्त जानकर यहाँ की सारी परिस्थिति का निरीक्षण कर उसी समय चन्दे में हजारों रुपये भर इस तीर्थ की रचनाके कार्य संचालकों को प्रोत्साहन दिया और उनके उत्साह को बढाते हुए आगे कार्य चलाने के लिये एक व्यवस्थापिका कमेटी नियुक्त कर दी गई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्यवस्थापिका कमेटी और संचालकों का कार्य

व्यवस्थापिका समिति :

संवत् १९६९ की उपर्युक्त सभा में ट्रस्टियों के रूप में जो कमेटी नियुक्त कर दी गई थी उसका सरकारी रजिस्ट्रेशन ता० २५ जून सन् १९२१ में करा दिया गया। यह कमेटी ३५ सभासदों की थी। उनके नाम इस प्रकार हैं :—

सभापति	१	श्रीमान	सेठ सिद्धकरणजी गोलेछा	चांदा
उपाध्यक्ष	२	,,	लूणकरणजी लोढा	चांदा
मंत्री	३	,,	हीरालालजी फत्तेपुरिया	वर्धा
खजांची	४	,,	रतनलालजी कोठारी	हिंगनघाट
ऑडीटर	५	,,	फत्तेचंदजी फलोदिया	अमरावती
सभासद	६	,,	लखमीचंदजी पुगलिया	चांदा
,,	७	,,	उदेकरणजी बांठिया	चांदा
,,	८	,,	किसनचंदजी कोठारी	चांदा
,,	९	,,	सूरजमलजी जालोरी	चांदा
,,	१०	,,	सुगनचंदजी बेद	वरोरा
,,	११	,,	पोकरचंदजी सीपानी	वरोरा
,,	१२	,,	नेमीचंदजी पारख	वरोरा
,,	१३	,,	चुन्नीलालजी फलोदिया	वरोरा
,,	१४	,,	छोटमलजी कोठारी	हिंगनघाट

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सभासद	१५	श्रीमान	सेठ फूलचंदजी चोरडिया	हिंगनघाट
,,	१६	,,	छगनमलजी पारख	हिंगनघाट
,,	१७	,,	किसनचंदजी कटारिया	हिंगनघाट
,,	१८	,,	प्रेमचंदजी सुराणा	वर्धा
,,	१९	,,	उदेकरणजी पुंगलिया	नागपुर
,,	२०	,,	नथमलजी कोठारी	नागपुर
,,	२१	,,	प्रेमकरणजी चोरडिया	नागपुर
,,	२२	,,	गुलाबचंदजी बैदमुथा	छिंदवाडा
,,	२३	,,	लखमीचंदजी भुरा	सिवनी
,,	२४	,,	माणिकलालजी कोचर, वकील	नरसिंगपुर
,,	२५	,,	मोतीलालजी भुरा	जबलपुर
,,	२६	,,	सूरजमलजी कोचर	कटंगी
,,	२७	,,	नंदरामजी बरडिया	गोटेगांव
,,	२८	,,	दीपचंदजी छल्लानी	कामठी
,,	२९	,,	मेघराजजी कोठारी	पुलगांव
,,	३०	,,	समीरमलजी फत्तेपुरिया	अमरावती
,,	३१	,,	भीकमचंदजी मानोत	अमरावती
,,	३२	,,	हीरालालजी पोपटलालजी	अमरावती
,,	३३	,,	नथमलजी लोढा	अमरावती
,,	३४	,,	पिरथीराजजी	आकोला
			छोगमलजी कोचर	नरसिंगपुर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया, वर्धा जैनतीर्थ भद्रावती के सर्व प्रथम मंत्री

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कमेटी का कार्य :

इस तरह ३५ सभासदों की जो कमेटी बनी थी, उसका काम सदा सुव्यवस्थित रहा है। प्रति वर्ष जमा खर्च की आडिटेड रिपोर्ट के साथ कमेटी के सामने हिसाब पेश किया जाता रहा है। आगामी वर्ष के लिये खर्च का बजट बनाकर कमेटी के आदेशानुसार ही कार्य संचालन किया जाता रहा है और किया जा रहा है। क्षेत्र की पुरानी रिपोर्ट से भी कार्य की जानकारी हो सकती है।

श्रीमान हीरालालजी फत्तेपुरिया का अपूर्व सहयोग :

इस तीर्थक्षेत्र के मंत्री श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया थे। आप ही इस क्षेत्र के सच्चे उद्धारक और जनक थे। आप में जो कार्य-शीलता का अटूट साहस था और क्षेत्र के प्रति असीम भक्ति थी, साथ ही इसकी उन्नति के लिये चाहे जैसा कष्ट और चाहे जैसी विपत्ति भी झेलने की सदैव तत्परता रहती थी, इसी कारण देश में स्थान स्थान पर घूमकर इस तीर्थ के निर्माण के लिये निधि इकट्ठी कर इस जंगल में मंगलधाम बनाकर रखने के कार्य में ही अपना सारा जीवन व्यतीत किया। यह सब आप ही के श्रम और श्रद्धा का फल है कि आज हमारी आंखों के सामने यह भव्य क्षेत्र अपनी आध्यात्मिक शांति, प्राकृतिक सौन्दर्य, और सांस्कृतिक भव्यता के साथ अपनी पुरातन अवस्था को प्राप्त कर, भारत के जैन तीर्थों में एक प्रमुख यात्रा स्थान के रूप में आप के सामने विद्यमान है। जिस के आलिशान मंदिर पर जैन ध्वजा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

फिर से लहराती हुई प्राचीन संस्कृति का आभास करा रही है। और इस भव्य मंदिर में विराजमान प्रभु की वह चमत्कारिक मूर्ति भक्ति के साथ सभीके दिलों को अपनी ओर खींच रही है। जिसके पूजन के लिए देश के यात्री-लोग दूर दूर से आकर भाव-भक्ति से इस तीर्थ की यात्रा कर पुण्य उपार्जन करते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ७ :

तीर्थ-निर्माण के उद्देश्य

ऊपर तीर्थ के पुनर्निर्माण का कारण संक्षेप में दर्शाया गया है। लेकिन कार्य का संचालन व्यवस्थित होने तथा समाज के सम्मुख उसकी सुव्यवस्थित रूपरेखा पहुँचते रहने के लिए कुछ उद्देश्य भी बनाए गए। वे उद्देश्य इस प्रकार हैं :

१. श्री पार्श्वनाथ प्रभु का मंदिर, धर्मशालाएं आदि बनवाने का प्रबन्ध करना तथा मन्दिरजी के अधीन या अन्तर्गत जितने भी मन्दिर और धर्मशालाएं आदि भवन तथा जायदाद आदि आवें उन सबकी रक्षा और प्रबन्ध करना।

२. भगवान् पार्श्वनाथ की पूजा, अर्चा आदि का योग्य प्रबन्ध रखना। मन्दिरों को भव्य तथा आकर्षक बनाने का प्रयत्न करना।

३. हर प्रकार की शिक्षा और विशेषकर जैन धर्म की शिक्षा के प्रचार का प्रयत्न करना और शिक्षा-केन्द्र स्थापित करना।

४. जैन-धर्म के सम्बन्ध में उपलब्ध प्राचीन साहित्य के प्रकाशन का प्रबन्ध करना और धर्म के उपदेश करवाना।

५. यात्रियों, छात्रों तथा नागरिकों की सुविधा के लिए पाठशाला, छात्रालय, आयुर्वेदिक औषधालय, अनाथालय, पींजरापोल, धर्मशालाएँ आदि बनवाना तथा विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

६. मध्यप्रदेश में कहीं भी जैन मुनि, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका आदि को जैसी भी आवश्यकता हो, यथाशक्ति सहायता पहुंचाना तथा जहाँ के मन्दिर, मूर्ति, ज्ञानभंडार की व्यवस्था न हो, उन्हें अपने हाथ में लेकर उनका योग्य प्रबन्ध करना और सहायता पहुँचाना।

७. उपर्युक्त सभी बातों के लिये आवश्यकतानुसार कार्य करना।

८. इन सब कार्यों के लिये चन्दे द्वारा रकम एकत्रित करना और उसे व्याज पर भी लगाना। आवश्यक जायदाद भी खरीदना, बेचना तथा ठेके आदि पर लेना। इमारतें भी बनाना।

प्रतिष्ठा महोत्सव :

उपर्युक्त कमेटी के संचालन और देखरेख में श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया ने १० वर्षों तक अथक श्रम उठाकर कार्य चलाने के पश्चात् संवत् १९७६ में फाल्गुन [illegible] ३ को श्री जय मुनिजी महाराज द्वारा अठाई महोत्सव के [illegible] ही अत्यन्त ठाठ-बाट और आनन्दपूर्वक प्रतिष्ठा की गई। इस प्रतिष्ठा-महोत्सव में दूर-दूर से करीब २० हजार यात्री-गण पधारे थे और सबने दिल खोलकर उदारता पूर्वक धर्मकार्यों के लिए अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया था। प्रतिष्ठा के पश्चात् भी क्षेत्र का निर्माण-कार्य शुरू रहा है और अभी भी शुरू है।

वह चमत्कारपूर्ण मूर्ति भक्ति के साथ सभी के दिलों को अपनी ओर खींच रही है, जिसके पूजन के लिए देश के यात्री-गण दूर-दूर से आकर भक्ति-भाव से तीर्थ की वंदना कर पुण्य उपार्जन करते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर लेप :

जब पार्श्व-प्रभु की प्रतिमा चांदा के श्री संघ द्वारा सरकार से अपने कब्जे में ली गई तब प्रतिमा का रंग पीला था। लेकिन वह बहुत ही जीर्ण और पुरातन होने से लेप करना आवश्यक हो गया था। लेप करने से प्रतिमाजी का रंग श्याम हो गया। लेप से ऐसा होना स्वाभाविक ही था। किन्तु इसे न समझते हुए सरकार ने यह आक्षेप लगाया कि मूर्ति बदल दी गई है। इसलिए क्षेत्र के मन्त्री श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया पर गिरफ्तारी वारंट निकाला गया। उस समय मध्यप्रदेश के गवर्नर सर फ्रैंक स्लाय साहब थे। वे वस्तुस्थिति को समझ गये थे। उनकी सहानुभूति से यह वारंट रद्द किया गया। सर फ्रैंक स्लाय साहब पहले कमिश्नर थे। वे इस क्षेत्र पर दर्शनों के लिए दो-तीन बार पधारे भी थे। इसके बाद तो सभी सरकारी अफसरों की सहानुभूति इस क्षेत्र के कार्यों के प्रति रही है।

सर फ्रैंक स्लाय साहब की मदद :

गवर्नर हो जाने के बाद स्लाय साहब सन् १९२१ में प्रभु के दर्शन को भांदक पधारे थे। तब उन्होंने आत्म-प्रेरणा से क्षेत्र को अपनी ओर से एक हजार रुपये तथा बगीचे में लगाने के लिए कुछ संतरे के पेड़ सहायता के रूप में प्रदान किये थे। चित्र में दर्शित मुख्य द्वार (सिंह द्वार) इसी सहायता से बनवाया गया है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ८ :

तीर्थ में मंदिर और प्रतिमाएँ

यहाँ पर अत्यन्त भव्य और रमणीय तीन जिन मंदिर हैं। तीनों मंदिर यहाँ की प्राकृतिक शोभा और आकर्षण के अनुरूप भक्तों और उपासकों को आनन्द प्रदान करते हैं।

मुख्य मन्दिर में भगवान् पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमाजी विराजमान हैं। यह मन्दिर उसी स्थान पर निर्मित हुआ है जहाँ पार्श्वप्रभु की प्रतिमा निकली थी। इस मंदिर में, मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त अगल-बगल में और भी तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं।

दूसरा मन्दिर आदि तीर्थंकर ऋषभदेवजी का है। यह मंदिर दो मंजिलवाली धर्मशाला से लगकर बगीचे के सामने है। इसे नागपुर निवासी जौहरी श्रीमान् रामकरणजी हीरालालजी के सुपुत्र श्रीमान् सेठ माणिकचंदजी जौहरी ने बनवाया है। मंदिर के ठीक सामने श्रीमान् माणिकचंदजी का एक स्टेचू है जिसमें वे प्रतिमाजी को प्रणाम करते हुए खड़े हैं। चित्र में यह मंदिर दिखाया गया है।

तीसरा मंदिर 'दादाजी का मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें श्रीमद् जैनाचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी की प्रतिमा है। यह मंदिर मुख्य दरवाजे के पास ही है। यह मंदिर बरोरा निवासी श्रीमान् नेमीचंदजी पारख की ओर से बनवाया गया है। इस की प्रतिष्ठा भी फाल्गुन सुदी ३ सं० १९७६ में मुनि जयचंदजी द्वारा हुई है।

मुख्य मंदिर की प्रतिमाएँ :

मूलनायक भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा अति प्राचीन चौथे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आरे की (करीब २३०० वर्ष पुरानी) बताई जाती है। इस पर एक लेख भी खुदा हुआ था, लेकिन वह इतना घिस गया था कि पढ़ने में कठिनाई होती थी और फिर लेप करते समय उसकी सुरक्षा की सावधानी न रखने से वह नष्ट हो गया। लेकिन इस से प्रतिमाजी की अतिशयता और प्राचीनता में कोई अन्तर नहीं आ पाया। प्रतिमा की चौड़ाई ४७ इंच और मस्तक तक ऊंचाई ५१ इंच है। फण सहित ऊंचाई ६१ इंच है। सप्त फणोंवाले धरणेन्द्र देव के विशाल छत्र से सुशोभित वह अर्ध पद्मासनस्थ भव्य प्रतिमा दर्शनार्थियों के मन को अपूर्व शान्ति प्रदान करती है। प्रतिमा के भव्य स्वरूप का अवलोकन और वन्दन कर मनुष्य गद्गद् और भक्ति-विभोर हो उठता है। मूलनायक प्रतिमा के अगल-बगल में एक ओर ८ वें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु और दूसरी ओर ५ वें तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की भव्य प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

ये प्रतिमाएँ वैशाख सुदी ६ सं० १५५९ में श्री विजयसेन सूरि द्वारा प्रतिष्ठित हुई हैं, जो यहाँ लाकर विराजमान की गई हैं।

इस मूल और मुख्य वेदी के अतिरिक्त दोनों तरफ दो विशाल वेदियाँ और हैं जिनमें बहुत-सी प्रतिमाएँ बाहर से लाकर प्रतिष्ठित की गई हैं। मूर्तियाँ सभी चारसौ से पाँचसौ वर्ष तक की प्राचीन हैं। इन पर उस-उस समय के लेख भी मौजूद हैं। सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा फाल्गुन सुदी ३ संवत् १९७६ में श्रीजयमुनि महाराज द्वारा करवाई गई है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चौमुखी प्रतिमा :

मूल मंदिर के ऊपरी भाग में शिखरजी के गभारे में यह भव्य चौमुखी प्रतिमा विराजमान है। एक ही पाषाण की यह चतुर्मुखी प्रतिमा मूलनायक पार्श्व प्रभु की तरह ही न जाने कितनी प्राचीन है। पीतवर्ण की यह सुन्दर प्रतिमा अत्यन्त शांत और मनोज्ञ है। ध्यान करनेवालों के लिए यह स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। दो ओर भगवान पार्श्वनाथ के मुख हैं और एक ओर भगवान् चन्द्रप्रभु तथा एक ओर ऋषभदेव का है। इस तरह एक ही प्रतिमा में तीन तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा अनोखी और आकर्षक है।

इस भव्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा हिंगणघाट निवासी श्रीमान् गेन्दमलजी कोठारी ने वैशाख सुदी ३ सं० १९७९ में महान् तपस्वी मुनि श्री मोतीलालजी महाराज द्वारा करवाई थी। यहाँ का आंगन टाइलों से जड़ा हुआ है जो ध्यान आदि करने के लिए बहुत ही रम्य और उपयुक्त है।

बावन जिनालय के भग्नावशेष :

प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में यहाँ बावन जिनालय थे। बहुत-सी मूर्तियाँ और शिलालेख भी मिले हैं। लेकिन खुदाई करते समय सरकार उस सब सामग्री को कब और कहाँ ले गई, ज्ञात नहीं, इसलिए निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। मंदिर का खुदाई-कार्य करते समय कुछ खंडित प्रतिमाएँ मिली हैं जिनमें से कुछेक पूजा के वस्त्रों की खोली में सुरक्षित रखी हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

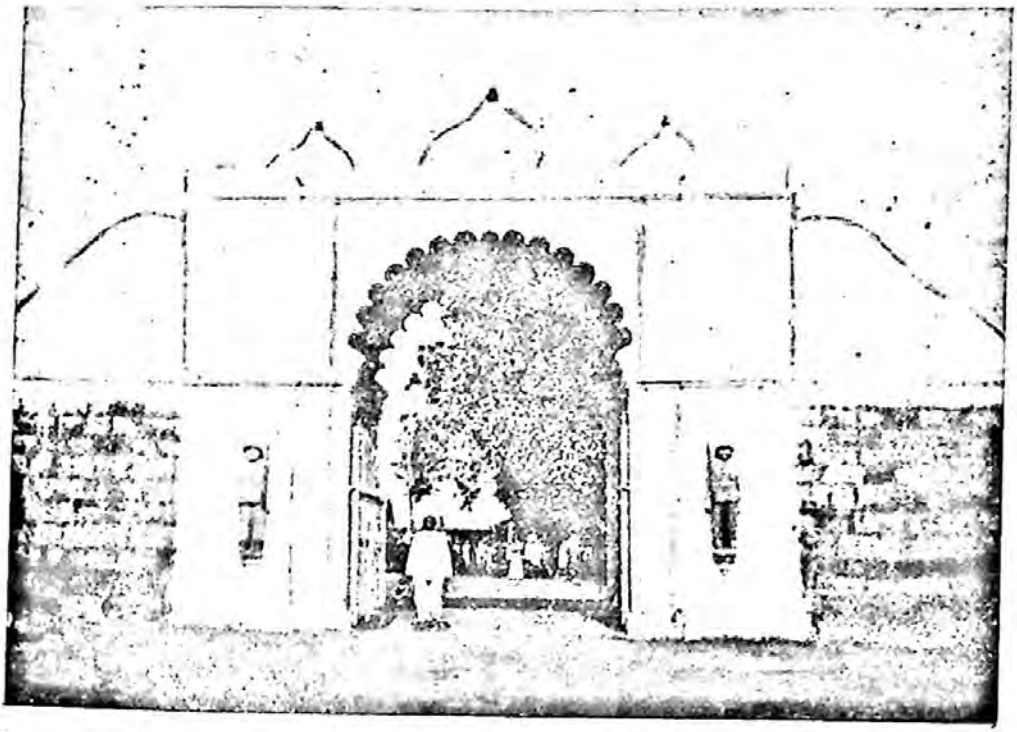

र्थ का मुख्य द्वार : यह फ्रैंक स्लाय साहब की सहायता से निर्मित हुआ है।

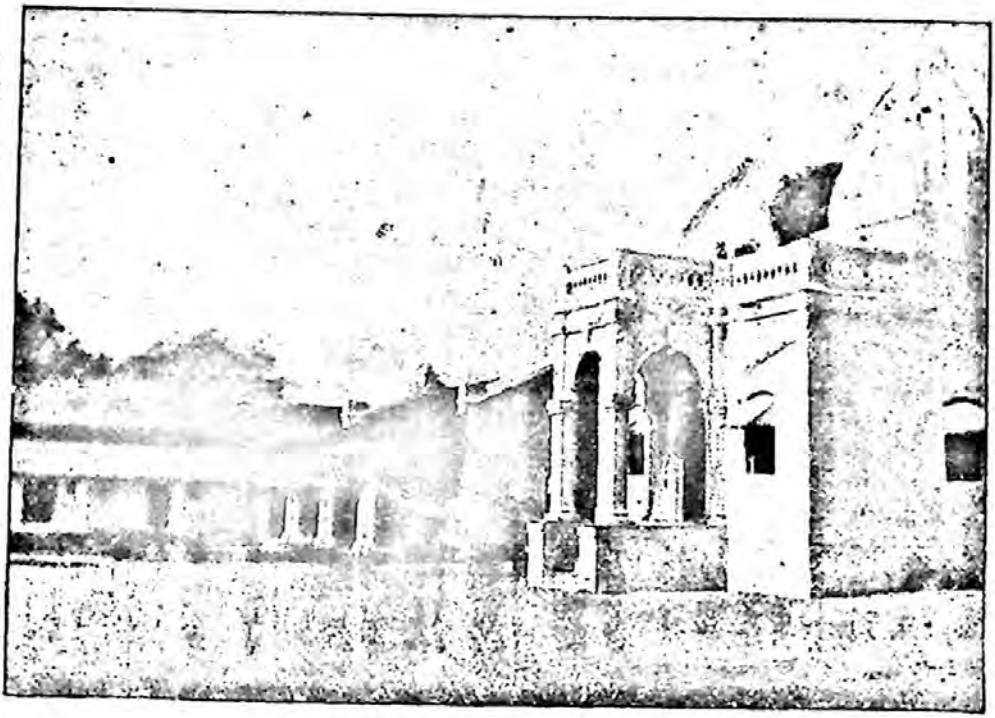

नेमीचंदजी पारख द्वारा निर्मित : दादाजी का मन्दिर : बाईं ओर धर्मशाला और रसोईघर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

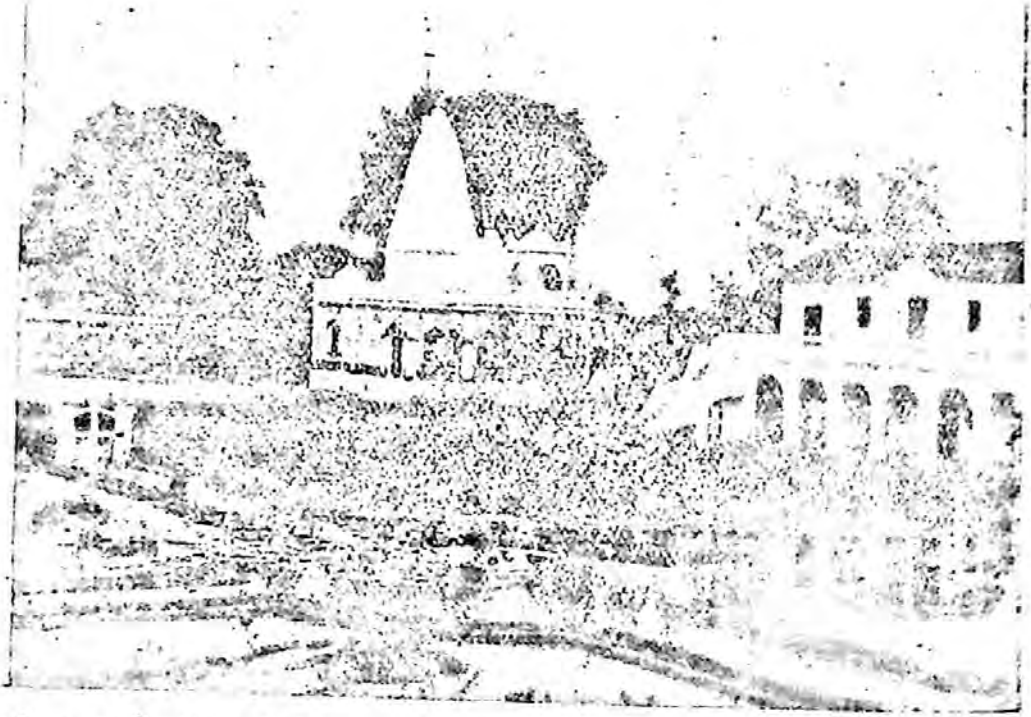

श्रीमान् जौहरी माणिकचन्दजी नागपुर वालों की ओर से निर्मित मन्दिर

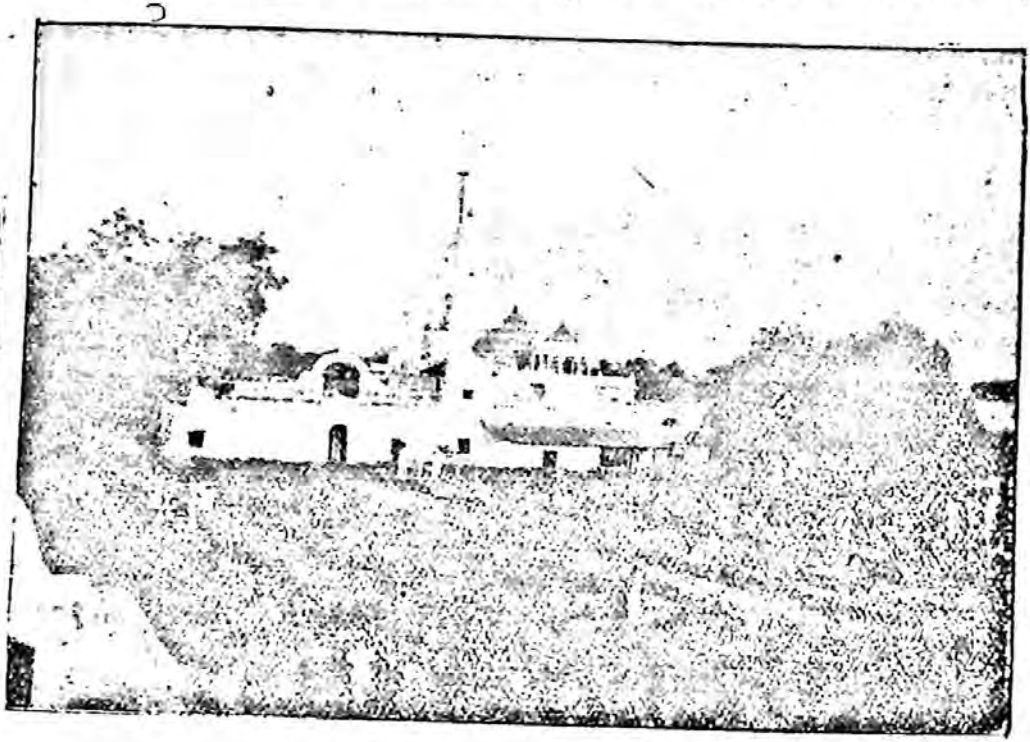

पूरा मन्दिर : सामने से–एक दृश्य

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ९ :

तीर्थ की प्रवृत्तियाँ

यात्रियों और दर्शनार्थियों के रहने, ठहरने तथा भोजन आदि की सुविधा के लिए क्षेत्र की ओर से सब प्रकार की उचित व्यवस्था निरन्तर रहती है। जो साधन जुटा कर रखे गए हैं वे इस प्रकार हैं—

धर्मशालाएँ :

यहाँ पर बगीचों के दाएं-बाएं दो धर्मशालाएँ हैं। मन्दिर की दाहिनी ओर की धर्मशाला दो मंजिल वाली है और बाईं ओर की एक मंजिल। ये धर्मशालाएँ समाज के उदार और करुणाचित्त सज्जनों द्वारा बनवाई गई हैं। पूरी एक धर्मशाला का भार किसी एक सज्जन पर न पड़े इसलिए अलग अलग खोलियाँ एक-एक दानी सज्जन की ओर से बन्धवाई गई हैं। इससे सब में क्षेत्र के प्रति अपनत्व की भावना जाग्रत रहती है। जिन-जिन लोगों की ओर से खोलियाँ बनी हैं उनके नाम पत्थर पर खुदवा कर खोलियों पर दीवाल में लगा दिए हैं।

क्षेत्र के कम्पाउंड में एक मंजिल धर्मशाला के नजदीक ही एक धर्मशाला और बनी है। हिंगणघाट निवासी श्रीमान् स्वर्गीय देवीचंदजी कोठारी की धर्मपत्नी ने अपने पति और भतीजे श्री सरदारमलजी तथा ननद छोटी बाई की पुण्य स्मृति में भोजनालय की बिल्डिंग के लिए इस क्षेत्र को २१००) प्रदान किए हैं ताकि इस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धर्मशाला में चलनेवाले भोजनालय की इमारत अच्छी बन जाय। इस धर्मशाला में एक भोजनालय चलता है जिसमें यात्रियों के लिए भोजन बनता है।

इस प्रकार इस क्षेत्र में एक धर्मशाला दो मंजिल है और दो एक मंजिल। एक मंजिलवाली दोनों धर्मशालाओं को दो मंजिल की बनाना अत्यन्त आवश्यक है। वार्षिक मेलों के अवसर पर इतने यात्री आते हैं कि इन धर्मशालाओं के कमरों में पूरी सुविधा नहीं हो सकती। इस महंगाई के समय में एक एक खोली में कम से कम एक-एक हजार रुपये लगने की सम्भावना है। जो जैन सज्जन इस पुण्य कार्य में दान देकर यात्रियों की सुविधा का स्थायी काम करने में सहायक बनेंगे वे विपुल पुण्य के साथ-साथ यश भी सम्पादन करेंगे और उनके नाम भी वर्षों तक खोलियों पर लगे रहेंगे। चित्रों को देखने से इस आवश्यकता की ओर सहज ही ध्यान आकर्षित हो सकता है।

भोजनालय :

यात्रियों को आने के पश्चात् पूजा-भक्ति, सेवा-अर्चा में किसी प्रकार की अड़चन, बाधा या तकलीफ न हो इसलिए क्षेत्र की ओर से निःशुल्क भोजनालय की व्यवस्था की गई है। इसका खर्च समाज के उदार मना दानदाताओं तथा सहायकों द्वारा ही चलता है। इसके संचालन की व्यवस्था करते समय नियम बनाया गया कि—

१. जो सज्जन १००१) प्रदान करेंगे वे भोजनालय के संचालक समझे जावेंगे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

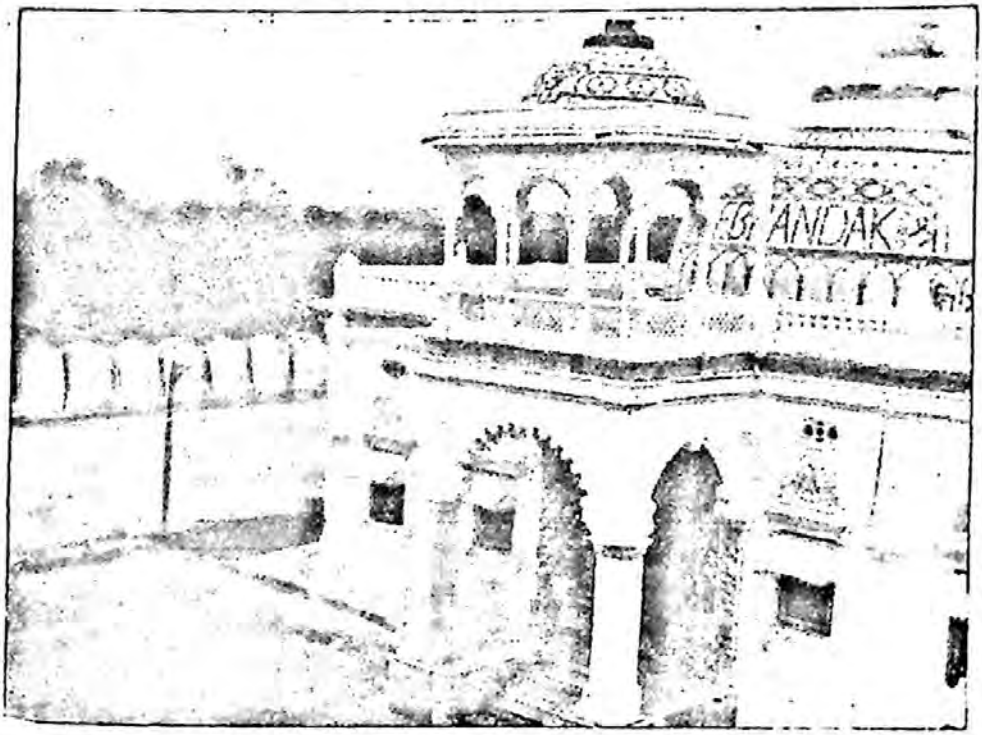

भगवान् पार्श्वनाथ का मूल मन्दिर

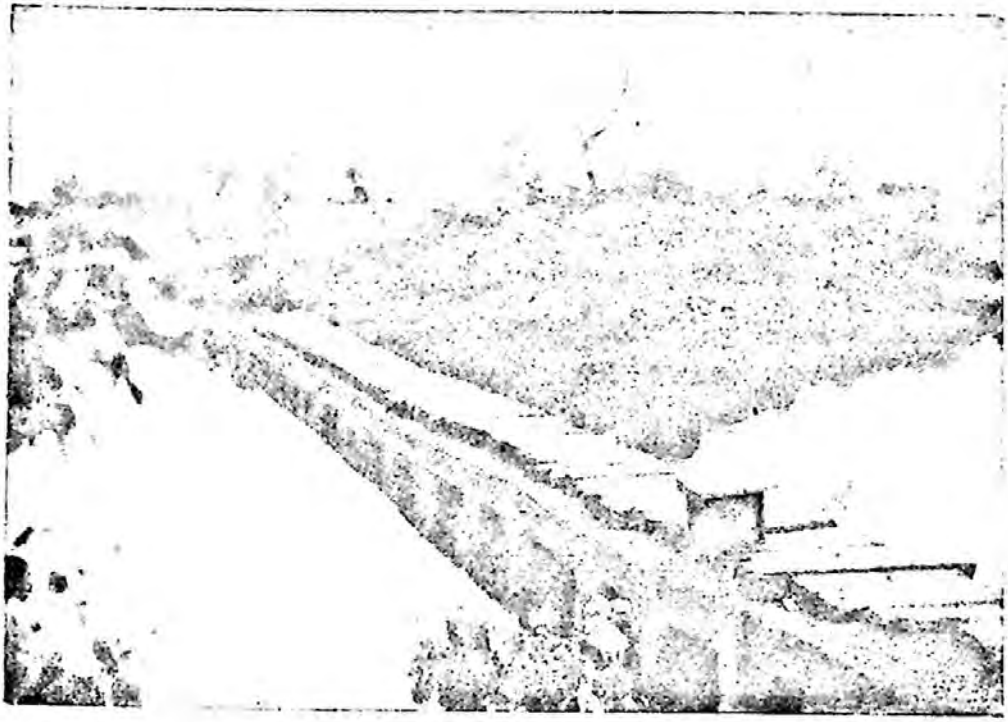

डोलारा तालाब पर प्राचीन पत्थरों का पुल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चण्डिका देवी का प्राचीन मन्दिर

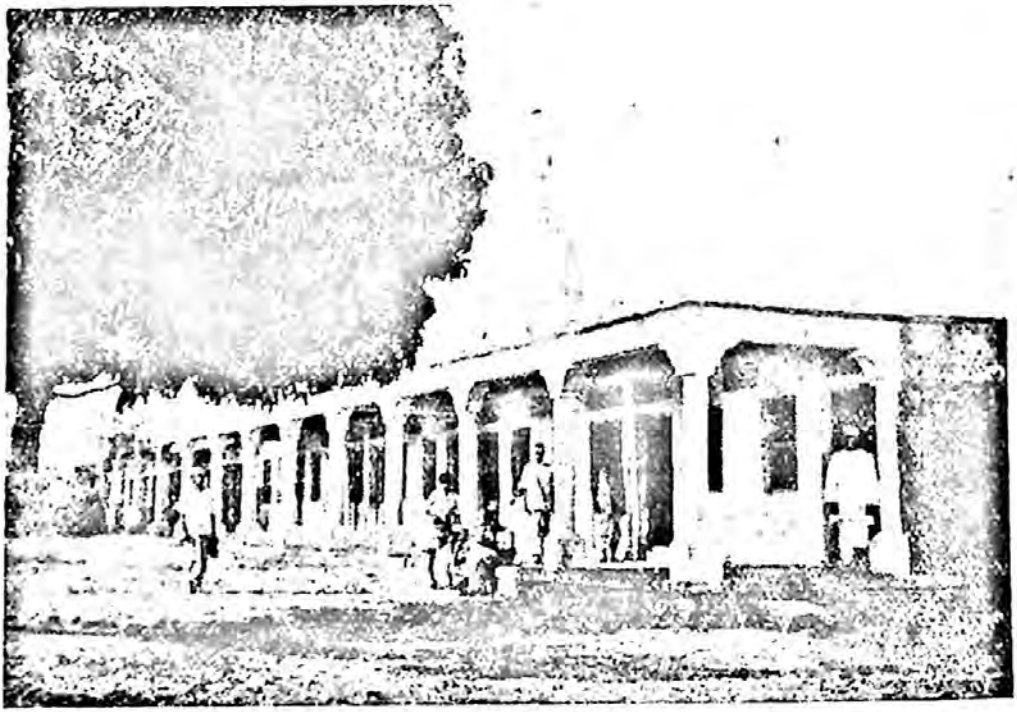

सिंहद्वार के बाहर की नई धर्मशाला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aradhak Trust

२. जो सज्जन ५०१) प्रदान करेंगे वे भोजनालय के सहायक समझे जावेंगे।

३. जो सज्जन ७५) प्रदान करेंगे वे भोजनालय के आजीवन सदस्य समझे जावेंगे।

इस नियम के अनुसार फण्ड जमा किया गया ताकि इसके व्याज से भोजनालय चलता रहे। भोजन करनेवालों से भोजन का शुल्क नहीं लिया जाता। किन्तु जो सज्जन अपनी शक्ति के अनुसार भेंट करना चाहते हैं, वह अवश्य स्वीकार किया जाता है।

लेकिन फण्ड के व्याज और भेंट आदि मिलाकर भी प्रतिवर्ष दो-तीन हजार का घाटा भोजनालय में रहता है। इस प्रवृत्ति के महत्त्व को समझकर समाज के सज्जन वृंद इस ओर ध्यान दें तो उन्हें महान् पुण्य का बंध होगा।

अबतक जो सज्जन संचालक और सहायक बने हैं उनके शुभ नाम नीचे दिए जाते हैं।

संचालक :

१००१) श्रीमान् सेठ चन्दनमलजी पुखराजजी कोचर, हिंगनघाट
१००१) श्रीमान् सेठ धनराजजी बन्सीलालजी कोचर, हिंगनघाट
१००१) श्रीमान् सेठ कुन्दनमलजी लालचन्दजी, ब्यावर (नया शहर)

सहायक :

५०१) श्रीमान् सेठ फूलचन्दजी सैंसकरणजी कोचर, हिंगनघाट

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५०१) श्रीमान् सेठ झुम्बरलाल भाई, बम्बई

५०१) श्रीमती यशवंती बाई हाथी भाई, बम्बई

आयुर्वेदिक औषधालय :

जन-स्वास्थ्य की दृष्टि से क्षेत्र की ओर से ही एक आयुर्वेदिक औषधालय भी चल रहा है। इस औषधालय से गाँव और गाँव के बाहर के सब लोग, बिना किसी भेदभाव के दवा ले जाते हैं। रोगियों से किसी प्रकार का पैसा या फीस नहीं ली जाती। इस सार्वजनिक प्रवृत्ति से क्षेत्र का महत्त्व जनता में बहुत अधिक बढ़ गया है। हमेशा एक वैद्य और कम्पाउंडर रहते हैं। दवाई और वेतन आदि में काफी खर्च हो जाता है। इस पुण्य प्रवृत्ति के लिए समाज को उदार दिल से दान करना चाहिए।

यहां के रमणीय और प्राकृतिक वातावरण को देखकर बहुत से लोगों की राय है कि एक सेनेटोरियम की स्थापना भी आवश्यक है। यहाँ सेनेटोरियम रहने से यात्रियों को न केवल आबहवा, बल्कि धार्मिक शांति की दृष्टि से भी काफी लाभ पहुंच सकता है। इसके लिए यहां का वातावरण बहुत ही अनुकूल है। इस कार्य में कम-से-कम दो तीन लाख रुपयों की जरूरत होगी। आशा है समाज इस विषय की ओर ध्यान देने की कृपा करेगी। अगर यहां सेनेटोरियम बन गया तो प्रांत की दृष्टि से भद्रावती का महत्त्व जनता की दृष्टि में बहुत बढ़ जायगा।

अभी औषधालय कच्चे मकान में ही है। इसके लिये एक भवन की निहायत जरूरत है। इस भवन में कम-से-कम बीस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हजार रुपये लगने की सम्भावना है। आशा है इस ओर उचित ध्यान दिया जायगा।

पांजरापोल (गौशाला) :

यहां की पांजरापोल में कुछ गायें भी पाली जाती हैं। जो थोड़ा बहुत दूध निकलता है उस में से कुछ तो भगवान के प्रक्षाल के लिये मंदिरजी में पहुंचा दिया जाता है और बाकी का दूध भोजनालय में। भोजनालय में उसका दही जमा दिया जाता है जो भोजन के उपयोग में आता है। अगर साधु-मुनि रहे तो दूध उनके उपयोग में लाया जाता है। इस प्रवृत्ति में भी घाटा ही रहता है।

वाचनालय :

यहाँ पर एक वाचनालय। (पुस्तकालय) भी है। इसमें करीब छहसौ के ऊपर जैन ग्रंथों और पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। यात्री भाइयों और मुनि-साधुओं को इस वाचनालय का उपयोग होता रहता है।

उपाश्रय :

मुख्य मंदिर के दरवाजे से लगकर ही एक उपाश्रय है जिस में त्यागी, सन्त, साधु-साध्वी आदि ठहरते रहते हैं। वाचनालय इसी उपाश्रय में है।

जीव रक्षा का कार्य :

जीव रक्षा इस तीर्थ की एक खासियत है। यहाँ पर छोटे मोटे २४ तालाब क्षेत्र के आसपास हैं। इन तालाबों में कोई मछली

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आदि जल जंतुओं को न मार सके इस के लिये प्रबंध रखा जाता है और पहरा भी रहता है। जीव रक्षा के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में भी काफी खर्च आता है। भारतवर्ष में जैन धर्म के और भी छोटे-मोटे कई तीर्थ-स्थान हैं, किन्तु जीव-रक्षा का ऐसा प्रबंध और कार्य और कहीं भी देखने में नहीं आता। इस पुण्य कार्य में समस्त श्रीसंघों को अपना तन-मन-धन से सहयोग देना चाहिए।

गुरुकुल का कार्य :

धार्मिक शिक्षा के महत्त्व को समझकर, बालकों में धार्मिक और नैतिक संस्कार पैदा करने की दृष्टि से गुरुकुल स्थापित करने का विचार किया गया। इसी लिये सन् १९३२ में निम्न लिखित श्रीमानों की एक सब-कमिटी नियुक्त करके गुरुकुल पाठ-शाला खोली गई। कमेटी के सदस्य ये सज्जन थे—

अध्यक्ष	श्रीमान् सेठ	पुखराजजी कोचर	हिंगणघाट
उपाध्यक्ष	,, ,,	शेषकरणजी बोरा	बम्बई
मन्त्री	,, ,,	नथमलजी सुराणा	हिंगणघाट
उपमन्त्री	,, ,,	कुन्दनमलजी चोरडिया	वेला
सभासद	,, ,,	गेंदमलजी कोठारी	हिंगणघाट
,,	,, ,,	नथमलजी कोठारी	नागपुर
,,	,, ,,	पानमलजी जौहरी	नागपुर
,,	,, ,,	चैनकरणजी गोलेछा	चांदा
,,	,, ,,	लूणकरणजी लोढ़ा	चांदा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उपर्युक्त कमिटी की अधीनता में तीन-चार वर्ष तक गुरुकुल चलाया गया। विद्यार्थी भी काफी थे। लगभग १५ हजार रुपये खर्च हुए। लेकिन कई कारणों से आगे गुरुकुल बन्द कर दिया गया।

बगीचे :

क्षेत्र के कम्पाउण्ड में दो बगीचे हैं। बगीचों में विविध प्रकार के पुष्पों के वृक्ष हैं तथा इनसे वातावरण बड़ा सुहावना सा रहता है। इन पर भी काफी खर्च किया जाता है।

इस तरह क्षेत्र की ओर से यात्रियों तथा जन-साधारण की सुविधा के लिए औषधालय, धर्मशाला, भोजनालय, पांजरापोल, बगीचे आदि के रूप में विविध प्रवृत्तियाँ चल रही हैं जिनमें हजारों रुपयों का वार्षिक खर्च है। उदार श्रीमानों को इस ओर ध्यान देकर क्षेत्र की प्रतिष्ठा बढ़ाने की दृष्टि से दिल खोलकर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करना चाहिए।

તપોવન ચિત્કોષ (જ્ઞાન ભંડાર)
તપોવન સંસ્કાર ધામ (પ્રભાકર ટ્રસ્ટ)
મુ. ધારાગિરિ, પો. કબીલપોર
નવસારી - ૩૯૬ ૪૨૪
ફોન: ૦૨૬૩૭-૨૩૬૯૬૦, ૨૩૬૪૬૮

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: १० :

क्षेत्र में करने योग्य आवश्यक कार्य

क्षेत्र के पुनर्निर्माण का कार्य शुरु करने को लगभग ४० वर्ष हो रहे हैं और पहले जिन कार्यों का उल्लेख हो चुका है, उनके अतिरिक्त अभी भी बहुत-सा कार्य करना बाकी है। क्षेत्र की विशालता, प्राचीनता, प्राकृतिक सुन्दरता और भव्यता को देखते हुए तो ऐसा लगता है कि यहाँ पर जितना भी कार्य किया जाय थोड़ा ही रहेगा। फिर भी संक्षेप में यहाँ जो कार्य करना अत्यन्त आवश्यक हैं, उनका निर्देश और उनकी रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है।

(१) गिरनार और शत्रुंजय के पट :

मुख्य मंदिर के गभारे के दरवाजे के अगल-बगल की दीवालों में गिरनार और शत्रुंजय के दो पट लगाने के लिए जगह रखी हुई है। मकराने के अच्छे पट जयपुर में बनते हैं। इस कार्य में लगभग पांच या छह हजार रुपयों का खर्च है।

(२) सभा मण्डप की शोभा :

मुख्य मन्दिर के सभा-मण्डप की शोभा-वृद्धि के लिए अभी वहाँ बहुत-सा शिल्पकारी, रंगाई आदि का काम शेष है। इस कार्य को पूरा करने में और सर्वांग सुन्दर बनाने में लगभग बीस हजार रुपया लगने की सम्भावना है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(३) बावन जिनालय :

मन्दिरजी के चारों ओर जो खाली जमीन है उसमें बावन जिनालय बनाने का विचार कई बार किया गया और इस सम्बन्ध में कमेटी में दो बार प्रस्ताव भी हो चुका। लेकिन यह कार्य इतना विशाल और जटिल है कि इसमें लगभग तीन लाख रुपया लगने की सम्भावना है। इतना अधिक आर्थिक साधन कमेटी के पास न होने से यह कार्य शुरू नहीं किया जा सका। कदाचित् किन्हीं कारणों से बावन जिनालय का कार्य शुरू न किया जा सके तो इस जमीन में संगमरमर पत्थर तो जड़वाना आवश्यक ही है। इस से वहाँ की सुन्दरता में अभिवृद्धि होगी और प्रदक्षिणा में भी उपयोग हो सकेगा। इस कार्य में भी काफी खर्च की सम्भावना है। इस खाली जमीन का दृश्य चित्र में देखा जा सकता है।

(४) नौबतखाना :

मन्दिर के दरवाजे पर दोनों ओर दो विशाल हाथी बनवाए गए हैं। विचार था कि इन हाथियों की अम्बारी पर प्रभु के दरबार में सदा नौबत बजती रहे ऐसी व्यवस्था की जाय। लेकिन अबतक हाथियों के ऊपर टीन की छपरी ही बनी हुई है। टीन की छपरी हटाकर नौबतखाना बनाने के योग्य इमारत खड़ी करने में कम से कम दस हजार रुपया खर्च होगा। तीर्थ के लिए, प्रभु के दरबार में नौबत बजने का विशेष महत्त्व है। यह कार्य कोई जैन भाई अपनी ओर से सम्पन्न करा सके तो उसे अपार पुण्य का बंध होगा और

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इमारत पर खुदा हुआ नाम उनकी अमर कीर्ति सदा के लिए अंकित रखेगा। चित्र में यह दृश्य देखा जा सकता है।

(५) कम्पाउण्ड के बाहर धर्मशालाएँ :

क्षेत्र का मुख्य दरवाजा (सिंह द्वार) में प्रवेश करने के पहले, यात्रियों को एक खुला मैदान दिखाई देता है। इस खुले मैदान में भी चारों ओर धर्मशालाएँ बनाने की योजना है। एक ओर की लाइन का आधा काम तो हो गया है। इस लाइन को पूरी करने के बाद उसी के सामने वैसी ही दूसरी लाइन की जमीन का भाग तैयार हो गया है। धर्मशाला के आधे भाग में ऊपर छत पर सीमेंट कांक्रीट का पलस्तर दिया जा चुका है। धर्मशाला की यह लाइन चित्र में दर्शायी गई है।

ऊपर की दोनों लाइनें पूर्व और पश्चिम दिशा की हैं। इसी प्रकार उत्तर और दक्षिण दिशा में भी धर्मशालाएँ बनाना आवश्यक है। ऊपर के बाकी रहे हुए कार्य में लगभग १५ हजार रुपया तथा उत्तर दक्षिण की लाइनों में २५ हजार रुपया लगने की सम्भावना है।

जहाँ ये चारों लाइनें बनानी हैं, उनके बीच की भूमि टेकड़ी के समान कुछ ऊँची है। इसे साफ करने, समतल बनाने के लिए खुदाई आदि में भी काफी खर्च होगा। इसलिए टेकड़ी को न गिराते हुए उसपर सुन्दर चबूतरा बनवाकर बीच में पक्का मकान औषधालय के लिए बनवाया जाय तो स्थान का अच्छा उपयोग हो सकता है। पहले लिखा जा चुका है कि इस कार्य में लगभग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२० हजार रुपया खर्च होगा। यहाँ पर चारों ओर सुन्दर सुन्दर और स्वास्थ्य वर्धक नीम, शाल आदि के वृक्ष लगाए जा सकते हैं।

(६) छापखाना और समाचार-पत्र :

इन सब के साथ ही एक छापखाने की भी नितांत जरूरत है। इस छापखाने में से उत्तमोत्तम जैन साहित्य का प्रकाशन किया जाय और एक साप्ताहिक समाचार-पत्र चलाया जाय। यह अहिंसा का युग है। भगवान् महावीर स्वामी के यथार्थ अहिंसा-सिद्धान्त का प्रचार करना हम सब जैनों का परम कर्तव्य है। भगवान् महावीर स्वामी ने राज्यवैभव और सुखोपभोग की समस्त सामग्रियों को ठुकराकर जिस साधना का पथ ग्रहण किया था उसे ही अहिंसा, तप और संयम के रूप में जनता के समक्ष रखना है। आज जैन समाज को भी अपनी वास्तविक धार्मिकता का ज्ञान नहीं है और पारस्परिक साम्प्रदायिक द्वेषों में फंसे हुए हैं। उन्हें भी चेतने और चेताने की जरूरत है। यह कार्य साधारण नहीं है और इसके लिये एक साप्ताहिक-पत्र की नितांत जरूरत है। इस में लगभग पच्चीस-तीस हजार रुपयों की जरूरत हो सकती है।

प्रेस के द्वारा अपनी समाज के निरुद्योगी और गरीब भाइयों को काम दिया जा सकेगा, वे कार्य सीखकर स्वावलंबी बनेंगे।

(७) गुरुकुल या हाईस्कूल :

पहले गुरुकुल शुरू होने तथा बंद पड़ने की चर्चा की गई है। इस संस्था को पुनः चालू करने की आवश्यकता है। देश में धार्मिक ज्ञान की यों ही उपेक्षा हो रही है और फिर बाहरी चमक दमक के वातावरण में हमारी सन्तान धर्म से दूर भाग रही है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इसलिये धार्मिक संस्कारों की पुष्टि के लिये गुरुकुल जैसी, भारत की प्राचीनता की द्योतक संस्था की भद्रावती जैसे स्थान में नितांत आवश्यकता है। इस संस्था को पुनः चालू करने में करीब तीन लाख रुपया आवश्यक हैं।

इस संस्था में जो छात्र आवेंगे उन्हें प्रेस का, खेती का कार्य सिखाया जा सकेगा।

ग्राम और जिले या प्रान्त के जो अजैन छात्र उसमें शिक्षण प्राप्त करेंगे, उनमें जैन धर्म के प्रति अपने आप आदर बढ़ेगा और लोगों में जैन समाज और तीर्थ की प्रभावना होगी।

(८) पार्श्व उपवन :

मंदिरजी के थोड़े ही फासले पर, तालाब के निकट एक छोटी-सी टेकड़ी है जहां पर एक चबूतरा बांधा हुआ है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष भगवान का अभिषेक आदि किया जाता है। यह स्थान अत्यन्त रमणीय और खुला है। एक विद्वान् की राय है कि इस स्थान को सुन्दर उपवन बना दिया जाय तो एक बड़ी अच्छी चीज बन जायगी। टेकड़ी के चारों ओर अशोक और शाल आदि के वृक्ष लगा दिए जावें तथा टेकड़ी को साफ करवा कर उस पर सीमेंट की या लोहे की बेंचें लगा दी जायें। इस स्थान को प्राकृतिक ढंग से ही सजाया जाय ताकि वन की शोभा नष्ट न होने पाए। टेकड़ी की जमीन पर फर्श लगवा दिया जाय। जो तीर्थ के निमित्त न आये वह भी इस स्थान पर एक बार आकर स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करने के लोभ को न रोक सके,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ऐसी सजावट स्थान की होनी चाहिए। इसमें भी करीब दस हजार के खर्च की सम्भावना है।

(९) जल-मंदिर :

ऊपर पृष्ठ में जल-मंदिर की योजना पर कुछ शब्द लिखे गए हैं। जल मंदिर, तालाब के बीचों बीच खड़ी टेकड़ी पर बनेगा। इस मंदिर के बारे में भी लोगों की राय यह है कि उस का बाहरी दिखावा इतना स्वाभाविक और सौंदर्यपूर्ण हो कि वहाँ आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति तालाब के जल और मंदिर की पवित्रता का एक साथ अनुभव कर सके। इस कार्य के लिये देश के नामी-नामी इंजीनियरों की सलाह लेनी चाहिये। यों तो जलमंदिर और बावन जिनालय के नक्शे बनकर तैयार हैं, लेकिन सर्वसाधारण की रुचि और आकर्षण की दृष्टि से इमारती दृष्टि से थोड़ा अन्तर करना होगा। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य कुछ अंशों में पावापुरी के जल-मंदिर से भी अधिक मनोरम और आकर्षक है। अगर शासन प्रेमी श्रीसंघ इस ओर ध्यान दे और योजना को कार्यान्वित किया जाय तो मध्यप्रदेश में यह अपनी कोटि का एक ही दृश्य बन सकता है।

(१०) घाटों की आवश्यकता :

तालाब करीब १८ एकर में फैला है और उस में सदा काफी जल रहता है। गाँव की ओर से आनेवालों के लिये और क्षेत्र की ओर से आनेवालों के लिये इस तरह इस तालाब पर दो घाट बांधने की खास जरूरत है। घाटों के बंध जाने पर तालाब और जल-मंदिर का सौंदर्य और महत्त्व बहुत बढ़ जायगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: ११ :

उत्सव और मेले

क्षेत्र में प्रतिवर्ष कुछ विशिष्ट तिथियों में मेले भी भरते हैं। मेलों और उत्सव-पर्वों पर सैकड़ों और हजारों भव्य धार्मिक लोग यात्रा करने के लिये पधारते हैं और पुण्यलाभ करते हैं। मेलों का परिचय इस प्रकार है :

प्रतिष्ठा दिवस :

यह दिन फाल्गुन सुदी ३ को मनाया जाता है। क्षेत्र में प्रतिष्ठा महोत्सव इसी तिथि को हुआ था। इसीलिये यह दिवस प्रति वर्ष मनाया जाता है। इस दिन ध्वजारोहण का कार्यक्रम होता है और पूजा-अर्चा होती है। श्रीमान् सेठ बंसीलालजी कोचर हिंगणघाट वालों की ओर से इस अवसर पर स्वामीवत्सल का भोजन भी दिया जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा :

चातुर्मास समाप्ति के समय का यह महत्त्वपूर्ण दिवस है। भारत के प्रायः सभी धर्मों में चातुर्मास के अन्त में कार्तिकी पूर्णिमा का महत्त्व माना गया है। इस दिन भी यहाँ पर मेला लगता है। पूजा आदि का विशेष कार्यक्रम रहता है। इस दिन स्वामी-वत्सल का भोजन सुबह हिंगणघाट निवासी श्रीमान् गेंदमलजी कोठारी की ओर से तथा संध्या के समय श्रीमान् चांदा निवासी श्रीमान् सेठ सुरजमलजी बोरा की तरफ से दिया जाता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म-कल्याणक महोत्सव :

यह महोत्सव पौष वदी १० को अत्यन्त धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान श्री पार्श्वनाथ की जयन्ती का (जन्म कल्याणक का) दिन होने से इस समय पौष वदी ९ से ११ तक तीन दिन तक यह उत्सव रहता है। इस प्रसंग पर दूर दूर से अनेक यात्री आते हैं। वरघोड़ा निकलता है, पूजाएं होती हैं और बड़ा आनन्द रहता है। इस समय तीन दिन तक निम्नलिखित सज्जनों की ओर से स्वामीवत्सल का भोजन दिया जाता है :

(१) पौष वदी ९ का भोजन पूना निवासी श्रीमान् सेठ मोटाजी रघुनाथ और श्रीमान् सेठ जिताजी सांकलचंद की ओर से होता है।

(२) पौष बदी १० के खास दिन का भोजन बम्बई निवासी श्रीमान् सेठ हजारीमलजी रेखचंदजी पारेख फर्म की ओर से होता है।

(३) पौष बदी ११ का भोजन नागपुर निवासी श्रीमान् सेठ तखतमलजी बख्तावरमलजी की ओर से होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: १२ :

उपसंहार

कमेटी और पदाधिकारी :

इस क्षेत्र के प्रथम अध्यक्ष चांदा निवासी श्रीमान् सेठ सिद्धकरणजी गोलेछा और मंत्री वर्धा निवासी श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया रहे थे। आप दोनों के अथक परिश्रम और धर्म-भावना के कारण ही यह तीर्थ इतनी उन्नति प्राप्त कर सका है। आप दोनों सज्जनों के द्वारा इस क्षेत्र की जो महान् सेवा हुई है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

संवत १९८२ में पौष सुदी ८ सन् १९२५ को श्रीमान् हीरालालजी फत्तेपुरिया का देहान्त हो गया। उनके पश्चात् इस क्षेत्र का मंत्रित्व भार इन सज्जनों ने सम्हाला है :

१. श्रीमान् पन्नालालजी फत्तेपुरिया, वर्धा
२. ,, छोटमलजी कोठारी, हिंगणघाट
३. ,, नथमलजी कोठारी, नागपुर
४. ,, बंसीलालजी कोचर, हिंगणघाट

इन सज्जनों ने भी अपने कार्यकाल में तन-मन से क्षेत्र को अपनी सेवायें अर्पित की हैं।

जिन-जिन पदाधिकारियों और सभासदों का स्वर्गवास हो गया तथा जो कमेटी की बैठकों में लगातार अनुपस्थित रहे और जिन का सभासदत्त्व इस कारण रद्द हो गया, उन-उन क स्थान

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पर कमेटी के नियमानुसार दूसरे सदस्य चुन लिये गये हैं। इस समय जो कमेटी प्रभाव में है, उसके सदस्यों के नाम अन्त में दिये गये हैं।

इस तरह नियमानुसार क्षेत्र का काम व्यवस्थित रीति से चलता रहा है।

आभार प्रदर्शन :

इस क्षेत्र की उन्नति, निर्माण, विकास और रक्षा आदि में श्रीमान् धनी-मानी सज्जनों, पदाधिकारियों, दानदाताओं, भवन निर्माताओं, भोजन प्रदाताओं, कार्यकर्त्ताओं, यात्रियों आदि से सहयोग और सहायता प्राप्त हुई है, उसके लिये कमेटी सब की अत्यन्त आभारी है। सम्पूर्ण समाज के हार्दिक सहयोग से अब तक जैसी उन्नति क्षेत्र की हो पाई है, वैसी ही आगे भी होगी, ऐसी आशा है। समय-समय पर जिन सज्जनों से सहायता प्राप्त हुई है, उनका उल्लेख उस उस समय की रिपोर्टों में कर दिया गया है।

उदार श्रीमान् तथा श्रीसंघों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक में, क्षेत्र में जिन-जिन बातों की आवश्यकतायें बताई गई है, उनकी पूर्ति और निर्माण में वे तन-मन-धन से सहायता प्रदान करें ताकि क्षेत्र को और भी आकर्षक, सर्वजनोपयोगी और भव्य बनाया जा सके।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: १३ :

कुछ अभिप्राय

क्षेत्र की वन्दना, दर्शन और अवलोकनार्थ निरन्तर धर्मात्मा और विद्वान् आते ही रहते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस स्थान का महत्त्व है इसलिए समय-समय पर भारतवर्ष के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता आते रहे हैं। यहाँपर हम दो-एक अभिप्राय ही, स्थानाभाव के कारण उद्धृत कर रहे हैं—

"श्री श्वेताम्बर जैन मण्डल के तत्त्वावधान में बनाया हुआ अर्वाचीन मन्दिर, अपने सुन्दर सज्जित भवन में, प्राचीन श्री पारसनाथजी की मूर्ति को नए ढंग से स्थान देकर प्राचीनकाल के कला, ज्ञान और दर्शन का रक्षण कर अत्यन्त सराहनीय आदर्श का निर्माण इस जंगल के अन्दर मंगल रूप में किया है। जैन समाज इसके लिए धन्यवाद का पात्र है।

हिसाब पाई-पाई का अच्छी तरह रखा जाता है। दस लाख की लागत और छह सौ रुपया मासिक चालू पगार खर्च यह समाज इस काम में बर्दाश्त करता है।

यहाँ के पदाधिकारियों की व्यवस्था भी अनुकरणीय है। ईमानदारी, सचाई और सद्गुण की व्यवस्था राष्ट के अन्य कार्यों में आनेपर समृद्धि का मार्ग सुगम हो सकता है।

इस प्राचीन काल के स्थान को इस ढंग से देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।"

(सही) रामगोपाल तिवारी

ता० १८-२-५०

(मुख्य मंत्री, पं० रविशंकर शुक्ल के पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्यप्रदेश के भूतपूर्व गवर्नर श्री स्लाय साहब ने भी अपनी सम्मति इस प्रकार ता० १३-४-२१ को व्यक्त की थी। इस बात का उल्लेख पहले किया जा चुका है कि क्षेत्र का मुख्य द्वार आपके द्वारा प्रदत्त १ हजार रुपयों से ही बना है। आपने लिखा है :

I, with Chanda officers came here to have a view of the Parasnath Temple and I am glad to see the beautiful Image of Parasnath and other strong and excellent buildings, at the same time found the management of the Temple in good hands.

There remaid good work to be constructed and the community should take more interest to complete it.

I attended good many Jain Places but did not see the satisfactory management as here, moreover I see not at other places but only here the protection of fishes in tanks by which I am very glad. Mr. Hiralal takes great troubles to devote his life in these works.

I am pleased to releave the rent of the land which the Govt. has paid to the Temple and to order to open the stone-mine too for the works herein.

I am very much obliged to Mr. Hiralal that he has hospitably treated us to a dinner.

Bhandak }
13-4-21 }

Sd. **Sly**
C. C.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

: १४ :

प्रबन्धकारिणी कमेटी

वर्तमानप्रबन्ध कारिणी के सदस्यों की नामावली

१.	श्रीमान्	चैनकरणजी गोलेछा, चांदा	अध्यक्ष
२.	,,	पन्नालालजी फत्तेपुरिया, वर्धा	उपाध्यक्ष
३.	,,	राजमलजी पुगलिया, चांदा	,,
४.	,,	सोभागमलजी लोढ़ा, चांदा	मन्त्री
५.	,,	गुलाबचन्दजी बांठिया, चांदा	उपमन्त्री
६.	,,	तिलोकचन्दजी कोठारी, हिंगणघाट	कोषाध्यक्ष
७.	,,	नेमीचन्दजी पारख, नागपुर	ऑडिटर
८.	,,	ज्ञानचन्दजी कोठारी, चांदा	सभासद
९.	,,	सूरजमलजी बोरा, चांदा	,,
१०.	,,	हीरालालजी गांधी, चांदा	,,
११.	,,	शा. मोहनलालजी लक्ष्मीचन्द चांदा	,,
१२.	,,	घेवरचन्दजी कोचर, वरोरा	,,
१३.	,,	चुन्निलालजी फिरोदिया, वरोरा	,,
१४.	,,	सागरमलजी बेद, वरोरा	,,
१५.	,,	हरकचंदजी चोपडा, वरोरा	,,
१६.	,,	पुखराजजी कोचर, हिंगणघाट	,,
१७.	,,	बंसीलालजी कोचर, हिंगणघाट	,,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१८.	श्रीमान्	त्रिंजराजजी पारख, हिंगणघाट	सभासद
१९.	,,	प्रेमराजजी कोठारी, हिंगणघाट	,,
२०.	,,	सुगनचन्दजी कटारिया, हिंगणघाट	,,
२१.	,,	रामलालजी बेद, हिंगणघाट	,,
२२.	,,	छोटमलजी चोरडिया, हिंगणघाट	,,
२३.	,,	छोटमलजी सुराणा, हिंगणघाट	,,
२४.	,,	शाह रायचंदजी पानाचंद, वर्धा	,,
२५.	,,	सोभागमलजी संकलेचा, आर्वी	,,
२६.	,,	पानमलजी जौहरी, नागपुर	,,
२७.	,,	तखतमलजी पितलिया, नागपुर	,,
२८.	,,	सेंसकरणजी बोरा, बम्बई	,,
२९.	,,	डालचन्दजी भूरा, सिवनी	,,
३०.	,,	माणिकलालजी कोचर वकील, नरसिंगपुर	,,
३१.	,,	मोतीलालजी कांकरिया, देवली	,,
३२.	,,	मोहनलालजी फिरोदिया, अमरावती	,,
३३.	,,	राजमलजी श्रीश्रीमाल, अकोला	,,
३४.	,,	कुंदनमलजी चोरडिया, बेला	,,
३५.	,,	घेवरचंदजी भंडारी, वणी	,,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

परिशिष्ट

प्रदेश के अन्य तीर्थ और सुविधाएँ

(१) अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ, – सिरपुर: यह स्थान अकोला जिले में है। अकोला से बासम जानेवाली मोटर सड़क पर मालेगांव में उतरकर पैदल या बैलगाड़ी से १ घंटे का रास्ता है।

(२) श्री ऋषभदेव प्रभु—कुलपाक: काजीपेठ से हैदराबाद जानेवाली एन. एस. रेल्वे लाइन पर आलेर स्टेशन पर उतरकर बैलगाड़ी से तीन मील का रास्ता है।

(३) चन्द्रप्रभु जैन श्वेताम्बर मंदिर वर्धा—नागपुर और बम्बई की ओर से आनेवाले यात्रियों की सुविधा के लिये यहाँ ठहरने आदि की व्यवस्था रहती है। वर्धा यों भी राष्ट्रीय नगर है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust